॥ श्रीः ॥

वृहदर्घ्य मार्त्तण्ड का चतुर्थ अङ्क।

ग्रहण फल दर्पण।

अर्थात्

सूर्य चन्द्र के ग्रहण द्वारा जगत् में होनेवाले फेरफार का ज्ञान।

भाषा तत्व व्याख्या सहित।

जिसको

प्राचीन ज्योतिः शास्त्रश्रमी, दैवज्ञभूषण, ज्योतिष रत्न आदि

पण्डित मीठालाल अटलदास व्यासने

अनेक अलभ्य प्राचीन ग्रन्थो से संग्रह करके

प्रकाशित करा। मु० ब्यावर-राजपूताना.

प्रथमावृत्ति] स १९७० वि [प्रति १०००

मूल्य ॥) आठ आना.

अमदाबाद टकशाल में युनीयन प्रीन्टींग प्रेस कंपनी लीमीटेडमां

मोतीलाल सामळदासने छापा

भूमिका।

सृष्टि विद्या के सिद्धान्तानुसार ब्रह्माण्ड के गोल पदार्थों में केवल एक सूर्य ही स्वय प्रकाशमान् है। चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और पृथिवी आदि अन्य जितने ग्रहादि हैं वे सब केवल उसी एक सूर्य ही के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। रात्रि के समय सूर्य पृथिवी ही की एकदम आड में अर्थात् उसी की दूसरी ओर आ जाने से सूर्य का प्रकाश पृथिवी पर नहीं आ सकता है। किन्तु अन्य ग्रहों तथा तारों पर सूर्य का प्रकाश नियमानुसार कुछन कुछ बनाही रहने से वे पदार्थ प्रायः चमकी ले दृष्टि आते हैं। ज्योतिः शास्त्र के मतानुसार ये सब अपनी २ गति से अपनी २ कक्षा में सदैव ही घूमते रहते हैं। इसी गति द्वारा चन्द्रमा घूमते २ जिस समय सूर्य से ठीक दूसरी ओर सामने पृथिवी की छाया के भीतर आ जाता है तब उस पर सूर्य का प्रकाश न पड़ सकने से वह अवस्थानुसार न्युनाधिक प्रकाश हीन हो जाता है और उसका वह अंश अदृश्य हो जाता है उस समय चन्द्रमा को ग्रहण हुआ कहते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा घूमते २ जिस समय बादल के समान सूर्य के न्युनाधिक आड़ा आ जाता है उस समय पृथिवी पर आने वाले सूर्य के उतने प्रकाश को रोक लेता है इसलिये उस समय सूर्य को ग्रहण हुआ कहते हैं। अर्थात् शुक्ल पक्ष की पूर्ण मासी को जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पृथिवी आ जाती है उस समय यदि रात्रि हो और चन्द्रमा का बिम्ब भी पृथिवी की ठीक छाया में आ जावे तो उस समय चन्द्रमा का ग्रहण होता है; परन्तु चन्द्र बिम्बका जितना अंश छाया में आ जावेगा उतना ही चन्द्र ग्रहण हुआ दीखेगा। इसी प्रकार कृष्ण पक्ष की अमावस्या को जब सूर्य और पृथिवी के बीच में चन्द्रमा आ जाता है उस समय यदि दिन हो और चन्द्रमा का बिम्ब भी सूर्य के ठीक आड़ा आ जावे तो उस समय सूर्य का ग्रहण होता है; परन्तु सूर्य बिम्ब का जितना अंश चन्द्रमा से ढँक जावेगा उतना ही सूर्य ग्रहण हुआ दीखेगा। अतः सूर्य चन्द्र को ग्रहण होने का मुख्य कारण तो यही है। परन्तु

श्री ब्रह्म देव तथा शिवजी के वर प्रदान से 'राहु' नामक ग्रह चन्द्र ग्रहण के समय तो पृथिवी की छाया में और सूर्य ग्रहण के समय चन्द्रमा के बिम्ब में प्रवेश कर जाता है। इसी लिये पुराण आदि धर्म शास्त्रों में ग्रहण का कारण राहु मानकर उस के निमित्त स्नान दान जप तप हवनादि करने से अक्षय पुन्य होने का विधान सद्भाव दृष्टि से वर्णन करा है।

पदार्थ विद्या के सिद्धान्तानुसार ग्रहण के समय सूर्य चन्द्र और पृथिवी की जो एक प्रकार की एक दूसरे के साथ आकर्षण शक्ति या विद्युत् शक्ति है उस में कुछ अन्तर पड़ जाता है जिस के कारण जगत् में भी अनेक प्रकार का परिवर्त्तन हो जाता है परन्तु किस प्रकार के ग्रहण के समय किस प्रकार का परिवर्त्तन होगा इसका ज्ञान सर्व साधारण को हो जाने के लिये परोपकारी महर्षियोंने अनेक शास्त्रो में बहुत विस्तार से वर्णन करा है। परन्तु आज कल के निरुद्यमी मनुष्यों के लिये उन अलभ्य ग्रन्थों का एकत्र करना ही महान् दुर्लभ है तो फिर उन महान् विषयों से युक्त अनेक ग्रन्थों में से ग्रहण से सम्बन्ध रखने वाले समग्र विषयों ही को छांटकर एकत्र कर लेना कितना दुर्लभ है! यह बात किसी से भी छिपी हुई नहीं है। इसलिये मैंने अनेक प्राचीन ग्रन्थों का साररूप "बृहदर्घ्य मार्त्तण्ड" नामक एक महान् विस्तृत ग्रन्थ सरल आर्य भाषा टीका सहित निर्माण किया है। यह ग्रन्थ लोकोपकारार्थ अंक अंक रूपसे प्रकाशित किया जाता है। इन में 'सर्वतो भद्रचक्र (त्रैलोक्य दीपक)' 'वृष्टि प्रबोध (भारत का वायु शास्त्र),' और 'संक्रान्ति प्रकाश' नामक तीन अक* तो प्रथम प्रकाशित किये जा चुके उसी प्रकार यह 'ग्रहण निबन्ध' नामक चौथा अंक भी प्रकाशित करने के लिये तीन भागों

---

* 'सर्वतो भद्रचक्र' तथा 'वृष्टि प्रबोध' नामक अक तो प्रकाशित होते ही हाथोहाथ बिक गये। परन्तु ग्राहकों की माग दिन प्रतिदिन बढती ही गई इसलिये वृष्टि प्रबोध को पहिले से भी अधिक बढाकर दूसरी बार छपवाया है जो थोडे ही दिनो मे सब ग्राहकों की सेवा में भेजी जा चुकेगी। और 'संक्रान्ति प्रकाश' की भी इनी गिनी प्रतियें शेष हैं वे भी शीघ्र ही बिक जावेगी।

में बनाया है। इन में ग्रहण होने का मुख्य तथा गौण कारण, उस के जानने के गौण तथा मुख्य उपाय और उस के स्पर्श मध्य-मोक्ष-स्थिति तथा विश्वे आदि का यथावत् ज्ञान कुछ भी गणित किये विना सहज ही केवल दो चार अंक मिलाने ही से हो जाने का सरल विधान तो गणित के सिद्धान्त से 'ग्रहणज्ञान दर्पण' नामक भाग में, ग्रहण के निमित्त से जगत् में होने वाले अनेक प्रकार के शुभाशुभ फलों का विधान फलित के सिद्धान्त से 'ग्रहण फल दर्पण' नामक भाग में और ग्रहण के समय स्नान -दान, जप-तप, हवन, तथा अनिष्टकारक ग्रहण की शान्ति आदि का विधान धर्म शास्त्रों के सिद्धान्त से 'ग्रहण पुण्य दर्पण' नामक भाग में किया गया है। इन में से यह 'ग्रहण फल दर्पण' नामक भाग प्रथम प्रकाशित किया जाता है इस विषय का ऐसा विस्तृत ग्रन्थ आज तक कहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ है। इस को देख कर यदि पाठकों की इच्छा उन 'ग्रहण ज्ञान दर्पण' तथा 'ग्रहण पुण्य दर्पण' नामक भागों के देखने की हुई तो वे दोनों भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित कर दिये जावेंगे। *

१९७० चैत्र सुदि ७

पण्डित मीठालाल व्यास,
पाली (मारवाड़)

---

* हमारे यहा की पुस्तकें प्रकाशित होते तो देर लगती है। किन्तु विक्री होत कुछ भी देर नहीं लगती अतः जो लोग मगाने में देरि करते हैं उनके हाथ पुस्तक न आने से दूसरी आवृत्ति छपने तक उन्हें पछताना पड़ता है इसी से हमारे यहा की पुस्तकों की उपयोगिता पाठक स्वयं ही जान सकते हैं।

सूचीपत्र।

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीः ॥

ग्रहण फल दर्पण।

ब्रह्मेशविष्णूँश्च महर्षिसङ्घान्
सन्दर्शिनोऽगम्य निमित्तशास्त्रान् ।
श्रीमन्महाराममुनामधेया-
नन्यान्समग्राँश्च गुरून्नमामि ॥ १ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेवजी आदि देवों को; गर्ग, पराशर, नारद आदि महर्षियों को; वराहमीर, नरपति, चण्डूजी आदि ज्योतिष के आचार्यों को; और श्रीमान् महारामदासजी व्यासजी आदि सम्पूर्ण गुरुओं को मन, वचन, और कायासे प्रणाम—नमस्कार करता हूं कि जिनके अनुग्रह से मेरा यह कार्य निर्विघ्नता से सिद्ध हो ।

बहुफलं जपदानहुतादिके स्मृतिपुराणविदः मवदन्तिहि ।
सदुपकारिजने च चमत्कृतिः ग्रहणमिन्द्विनयोः मवदेत्ततः ॥ २ ॥

परम पूज्यनीय महर्षियोंने जगत् के हितार्थ सूर्य तथा चन्द्रमा के ग्रहण सम्बन्धी सम्पूर्ण प्रकारका ज्ञान तीन भागों में बहुत विस्तार से वर्णन किया है उनमें ग्रहण होने के समय, स्पर्श, मध्य, मोक्ष, स्थिति, शर, सन्मीलन, उन्मीलन, और बिम्ब आदि के ज्ञान का निर्णय तो सिद्धान्त आदि गणित के ग्रन्थों में; ग्रहण के समय स्नान, दान, जप, तप हवन और सूतक आदि के विधि निषेध का निर्णय पुराण आदि धर्म शास्त्रोंमें; और ग्रहण के निमित्त से सम्पूर्ण जगत् में होनेवाले अनेक प्रकार के चमत्कारी शुभाशुभ फलों का निर्णय संहिता आदि फल विधायक ज्योतिष् के ग्रन्थों में किया है ।

सारं सारं समुद्दत्य पूर्व शास्त्र कदम्बतः ।
क्रियते सुखबोधाय ग्रहस्य फलदर्पणम् ॥ ३ ॥

ग्रहण से सम्बन्ध रखने वाले उपरोक्त तीनों विषयों का सर्व साधारण को सुख से बोध—ज्ञान हो जाने के लिये मैंने अनेक प्रकार के प्राचीन ग्रन्थों में से सारका भी परम सार रूप संग्रह एकत्र करके फिर ग्रहण जानने की गणित तथा धर्म शास्त्रों के विधान तो 'ग्रहण निबन्ध' नामक ग्रन्थमें किया है और फलित् सम्बन्धी सम्पूर्ण प्रकारका विधान इस 'ग्रहण फल दर्पण' नामक ग्रन्थ में करता हूं।

भारद्वाजकुलारविन्दतरणिर्माध्यन्दिनीयो द्विजो
नानाशास्त्रविचार मग्नहृदयो व्यासावटङ्काङ्कितः ।
वास्तव्यो मरुमण्डले सुविदिते पालीपुरे धार्मिको
जात्यापौष्करणो महीधर सुतः श्रीमिट्ठलालाभिधः ॥ ४ ॥

मारवाड़ देशस्थ जोधपुर राज्यान्तरगत व्यापार के लिये सुप्रसिद्ध 'पाली' नगर में निवास करनेवाला, पुष्करणा ज्ञातीय, भारद्वाज गोत्री, माध्यन्दिनीय शाखाध्यायी—शुक्ल यजुर्वेदी, टङ्कशालावटंक—व्यासपदाधिकारी. श्रीमान् महीधर शर्म्मा का पुत्र, ज्योतिः शास्त्र आदि अनेक प्राचीन शास्त्रों के तत्व का अन्त करण से विचार करनेमें सदा मग्न रहनेवाला ('प्राचीन ज्योतिःशास्त्रश्रमी, दैवज्ञ भूषण, ज्योतिष रत्न आदि') मैं पण्डित मीठालाल व्यास इस ग्रन्थको प्रकाशित करता हूं।

ग्रहण निर्णय ।

चन्द्रस्य यदिवा भानोः राहुणा सह संगमः ।
उपरागमिति ख्याता तत्रानन्त फलं स्मृतम् ॥ ५ ॥

राहु वा केतु के साथ चन्द्रमा का योग होने से चन्द्र ग्रहण और सूर्य का योग होने से सूर्य ग्रहण होता है उसे पर्व, उपराग, ग्रह वा ग्रहण कहते हैं।

ग्रहण होने का मुख्य कारण ।

राहुः कुभामण्डलगः शशाङ्कं शशाङ्कग छादयतिन विम्बम्।
तमोमयः शम्भुवर मदानात्र सर्वागमानाम विरुद्धमेतत् ॥ ६ ॥

चन्द्रमा का बिम्ब पृथिवी की छाया में आ जाने से चन्द्र ग्रहण ओर सूर्य के आडा आ जाने से सूर्य ग्रहण होता है यही ग्रहण होने का मुख्य कारण है । परन्तु श्री महादेवजी के वरदान से चन्द्र ग्रहण के समय तो पृथिवी की छाया में और सूर्य ग्रहण के सभय चन्द्रमा के बिम्ब में अन्धकारमय राहु प्रवेश होता है इसी लिये पुराण आदि धर्मशास्त्रों तथा गणित व फलित आदि ज्योति शास्त्रों में ग्रहण होने का कारण राहु माना है । इसका विशेष निर्णय मेरे बनाये हुये "बृहदर्घ मार्त्तण्ड" नामक ग्रन्थ के 'ग्रहण निबन्ध' नामक अङ्क में किया गया है ।

ग्रहण स्वामि फल प्रकरण ।

पर्व स्वामि निर्णय—

षण्मासोत्तरवृद्धयाः पर्वेशाः सप्तदेवताः क्रमशः ।
ब्रह्माशशींद्र कौवेरावरुणाग्नियमाश्च विज्ञेयाः ॥ ७ ॥

सृष्टिके प्रारम्भ से ६ । ६ महीनों के क्रम से ब्रह्मा आदि ७ देवता पर्व (ग्रहण) के स्वामि होते है जैसे (१) से ब्रह्मा, (२) से चन्द्र, (३) से इन्द्र, (४) से कुबेर, (५) से वरुण, (६) से अग्नि और (७) से यम।

पर्व स्वामि ज्ञान—

शाकंरविगुणंमासैर्यातैरादयं विभाजितं ॥
तानशेषेह्वतेचाब्धैः शेषेपर्वेश निर्णयः ॥ ८ ॥

विक्रम संवत् में से १३५ हीन करने से जो शेष रहे उसे शालीवाहन का शक कहते हैं उस शक को १२से गुना करके फिर चैत्रादि गणना से ग्रहण के मास तक की संख्या मिला के ४९ का भाग दें फिर जो

शेष रहे उसको ७ का भाग देने से जो शेष रहे उसका स्वामि ब्रह्मादि क्रम से जानें।

ब्रह्मा स्वामि फल—

पर्वाधिपेब्रह्मणिसस्यसंपत्वृद्धिर्द्विजानांचतथा पशूनाम्।
क्षेमंप्रजानां धनधर्मवृद्धिर्निरोगतास्याद्विजयोमरार्चाः ॥ ९ ॥

ग्रहण का स्वामि ब्रह्मा हो तो वर्षा श्रेष्ट, खेतियों की समृद्धि, ब्राह्मणों व पशुओं को सुख, जगत् में क्षेम कल्याण आरोग्य आदि शुभतथा धन व धर्म की वृद्धि और देवताओं की जय होवे।

चन्द्र स्वामि फल—

चंद्रेचपर्वाधिपतौ प्रजानांक्षेमंचविद्वज्जन पीडनंस्यात् ॥
अवर्षणं धान्यमहर्घताचविनाश मायांतितथौषधीनाम् ॥ १० ॥

ग्रहण का स्वामि चन्द्र हो तो प्रजा मे क्षेम कल्याण, विद्वानों को पीडा, वर्षा की कमी, धान्य तेज और सम्पूर्ण प्रकार की औषधियों का नाश जिस से किराना तेज होवे।

इन्द्र स्वामि फल—

इन्द्रोयदापर्वपतिस्तदानीम्परस्परं स्यात्कुकटो नृपाणाम्।
धान्यानिनश्यन्तिशरद्भवानिक्षेमम्प्रजानां नभवेत्कदाचित् ॥११॥

ग्रहण का स्वामि इन्द्र हो तो राजाओं के परस्पर वैर, शरद ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश और जगत् में अक्षेम तथा अकल्याण आदि अशुभ फल होवे।

कुबेर स्वामि फल—

यदाकुबेरोग्रहणाधिपः स्यात्तदार्थनाशोधनिनां जनानाम्।
क्षेमंसुभिक्षंचनिरामयत्वं लोकाश्चसर्वभयवर्जितास्युः ॥ १२ ॥

ग्रहण का स्वामि कुबेर हो तो धनवानों के धन का नाश, जगत् में क्षेम कल्याण, आरोग्य, निर्भयता और सुभिक्ष होवे।

वरुण स्वामि फल—

जलेश्वरोपर्वपतौ सुभिक्षंप्रजास्तथोपद्रववर्जिताश्च ॥
क्षेमंचसर्वत्रधनप्रवृद्धिः पीडांसमायांति च राजपुत्राः ॥ १३ ॥

ग्रहण का स्वामि वरुण हो तो जगत् में क्षेम कल्याण, धनकी वृद्धि, उपद्रवों का नाश, और सुभिक्ष होवे जिस मे प्रजा को आनन्द किन्तु राज पुत्रों को पीडा होवे।

अग्नि स्वामि फल—

पर्वाधिपोग्निः सतुमित्रनामाधनप्रवृद्धित्वभयं क्षितौचः ॥
शुभाचवृष्टिर्नृपतीन्हितस्छान् निरोगतांचाविकरोतिसस्यम्॥ १४ ॥

ग्रहण का स्वामि अग्नि हो तो वर्षा श्रेष्ठ, खेतियों की वृद्धि, धन की प्राप्ति, भय तथा रोगों का नाश और राजाओं का कार्य सिद्ध होवे।

यम स्वामि फल—

यमोयदापर्वपतिस्तदास्याद् वर्षणंभूपभयंप्रजानाम् ।
अन्नक्षयंचौरभयं पृथिव्यांदुर्भिक्षमेवं मुनिभिः प्रदिष्टम् ॥ १५ ॥

ग्रहण का स्वामि यम हो तो जगत में अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, धान्य का नाश, चोरों का उपद्रव और राजा का भय होवे।

स्वामि रहित पर्व फल—

पर्वेशहीनंग्रहणं यदास्यात्तदाप्रजानाम शुभप्रदंहि ॥
अवृष्टिदंक्षुन्मरकप्रदं च कदापिकालांतरतोभवेत्तद ॥ १६ ॥

कोई काल में कदाचित् स्वामि के विना ही ग्रहण होवे अर्थात् ६।६ महिनों का क्रम छोडकर ५ । ७ । ११ । १३ आदि महिनों में चाहे जिस समय ग्रहण हो जावे तो जगत् मे अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और महामारी आदि अशुभ फल होवे।

—०—

अयन फल प्रकरण ।

उत्तरायन फल—

द्विजानो क्षत्रियाणांचगवांच पीडनंभवेत् ॥
धान्यं महर्घपणमासैः ग्रहणेचोत्तरायणे ॥ १७ ॥

ग्रहण उत्तरायन में हो तो ६ मास तक ब्राह्मण, क्षत्री तथा गायों को पीड़ा और धान्य मँहगा होवे ।

दक्षिणायन फल—

दक्षिणायनगेराहौ वैश्यशूद्र प्रमर्दनम् ॥
महिषेकुंजरेपीडात्रिभिर्मासैर्महर्घताः ॥ १८ ॥

ग्रहण दक्षिणायन में हो तो ३ मास तक वैश,शूद्र तथा भैंसियों और हाथियों को पीड़ा तथा मँहगे हो जावें ।

—⊛—

मास फल प्रकरण ।

कार्त्तिक मास फल—

कार्त्तिक्यामनलोपजीविमगधान् प्राच्याधिपान् कोशलान्
कल्माषानथशूरसेनसहितान् काशींश्च संतापयेत् ।
हन्याच्चाशुकलिंगदेशनृपतिं सामात्यभृत्यं तमो
दृष्टं क्षत्रियतापदं जनयति क्षेमं सुभिक्षान्वितम् ॥ १९ ॥

ग्रहण कार्तिक में होतो सुनार, लुहार, हलवाई, भाडभूंजे, वा अंजनेर आदि अग्नि से जीवीका करने वाले; मगध देश, पूर्व देश, कौशल देश, कल्मष देश, सूरसेन देश, काशि देश, व कलिंग देश के राजा तथा प्रजा को पीड़ा; और धान्यादि का भाव सस्ता हो जावे ।

मृगशिर मास फल—

काश्मीरकान् कोशलकामपौंड्रान् मृगांश्च हन्यादपरांतकाश्च ॥
ये सोमपास्तांश्च निहंति सौम्ये सुवृष्टिकृत्क्षेमसुभिक्षकृच्च ॥ २० ॥

ग्रहण मिगशिर में हो तो काश्मीर कोशल पौंड्र अपरान्तक—इन देशों में कष्ट, पशुओं का नाश, सोमपान करने वालों को पीड़ा और जगत् में सुवृष्टि सुभिक्ष तथा क्षेम कल्याण होवे।

पोष मास फल—

पौषे द्विजक्षत्रजनोपरोधः ससैन्धवाख्याः कुकुराविदेहाः ॥
ध्वंसं व्रजंत्यत्र च मंदवृष्टि र्भयं च विद्यादशुभिक्षयुक्तम् ॥ २१ ॥

ग्रहण पोष में हो तो ब्राह्मण तथा क्षत्रियों को पीड़ा, सिन्ध कुकुर विदेह—इन देशों में कष्ट, और जगत् में वर्षा की कमी तथा दुर्भिक्ष आदि का भय होवे।

माघ मास फल—

माघे तु मातृपितृभक्त वशिष्टगोत्रान्
स्वाध्यायधर्मनिरतान् करिणस्तुरंगान् ॥
वंगांगकाशिमनुजांश्च दुनोति राहु-
र्वृष्टिं च कर्षुकजनानुमतां करोति ॥ २२ ॥

ग्रहण माघ में हो तो मातापिता की भक्ति करने वाले, वसिष्ठ गोत्री, वेद पाठी व विद्यार्थि तथा धर्मात्माओं को कष्ट; हाथी तथा घोड़ो का नाश; वंग, अंग, काशी, इन देशों में क्लेश और जगत् में वर्षा खेति करने वालों के मन चाही होवे।

फाल्गुन मास फल—

पीडाकरं फाल्गुनमासिपर्व वंगास्मकावंतकमेकलानाम् ।
नृत्तज्ञ यस्य प्रवरांगनानां धनुष्कर क्षत्रतपस्विनां च ॥ २३ ॥

ग्रहण फाल्गुन में हो तो नाचने तथा गाने वालों, श्रेष्ठ स्त्रियों, धनुष बनाने वालों, क्षत्रियों तथा तपस्या करने वालों को पीड़ा; और वंग, अश्मक, आवन्त, मेकला—इन देशों में क्लेश होवे।

चैत्र मास फल—

चैत्र्यं तु चित्रकरलेखकगेयशक्तान्
रूपोपजीवि निगमज्ञहिरण्यपण्यान्
पौंड्रान्ध्रकैकयजनानथकाश्मकांश्च-
तापस्पृशत्यमरपोत्रविचित्रवर्षी ॥ २४ ॥

ग्रहण चैत्र में हो तो चित्रकार तथा फोटाग्राफर, लेखक, वर बनाने वाले, वेश्या भांड तथा नाटककार आदि रूप से जीविका करने वालों को पीड़ा; पौंड्र, आन्ध्रक, कैकेय तथा असमक—इन देशों में क्लेश और सोना तथा व्यापार की अन्य वस्तुओं का भाव तेज हो जावे।

वैशाख मास फल—

वैशाखमासे ग्रहणे विनाशमायांति कार्पासतिलासमुद्गाः ॥
इक्ष्वाकुयौधेयशकाः कालिंगाः सोपद्रवाः किंतु सुभिक्षमस्मिन्॥२५॥

ग्रहण वैशाख में हो तो इक्ष्वाकु, यौधय, शक, कालिंग—इन देशों में उपद्रव; कर्पास रुई सूत कपडा, तिल तेल, तथा मुंग का भाव तेज और जगत् में सुभिक्ष होवे।

ज्येष्ठ मास फल—

ज्येष्ठे नरेंद्रः द्विजराजपत्न्याः सस्यानिवृष्टिश्च महागणश्च ॥
प्रध्वंशमायांति नराश्च सौम्याः शालैः समेताश्च निपादसंघाः॥२६॥

ग्रहण ज्येष्ठ में हो तो ब्राह्मण राजा तथा रान स्त्री, महागण, निपाद तथा सोमपान करने वालें को पीडा; और वर्षा की कमी, तथा खेतियोंका नाश जिस से धान्य तेज हो जावे।

आषाढ मास फल—

आषाढपर्वण्युदपानवप्र नदीप्रवाहान् फलमूलवार्त्तान् ॥
गांधारकाश्मीरपुलिंदचीनान् हतान्वदेत् मंडलवर्षमस्मिन् ॥२७॥

ग्रहण अषाढ में हो तो तालाव नदि आदि, फल, मूल, कन्धार, काश्मीर, पुलिंद, चीन आदि का नाश और वर्ष सर्वत्र एकसी नहीं होवे।

श्रावण मास फल—

काश्मीरान् सपुलिंदचीनयवनान् हन्यात् कुरुक्षेत्रजान्
गांधारानपिमध्यदेशसहितान् दृष्टो ग्रहश्रावणे ।
कांबोजैकशफाश्चशारदमपि त्यक्त्वा यथोक्तानिम–
नन्यत्र प्रचुरान्नहृष्टमनुजैर्द्धात्रीं करोत्याद्दताम् ॥ २८ ॥

ग्रहण श्रावण में हो तो काश्मीर, पुलिंद, चीन, यवन देश, कुरु देश, कन्धार, मध्य देश, कांबोज, एकपाद देश—इनका तथा शरद ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश किन्तु उपरोक्त देशों को छोड़ के अन्य देशों में धान्य की वृद्धि तथा मनुष्यों को आनन्द होवे।

भाद्रपद मास फल—

कुलिंगवंगान् मगधान् सुराष्ट्रान्म्लेछान् सुवीरान् दरदाश्मकांश्च ॥
स्त्रीणां चगर्भानसुरा निहंति सुभिक्षकृद्भाद्रपदेभ्युपेतः ॥ २९ ॥

ग्रहण भाद्रपद में हो तो कलिंग, बंग, मगध, सुराष्ट्र, म्लेछ देश, सुवीर, दर्द, अश्मक, इन देशों की पीड़ा; स्त्रियों के गर्भ नाश और जगत् में सुवृष्टि तथा सुभिक्ष होवे।

आश्विन मास फल—

कांबोजचीनयवनान् सहशिल्पिकृद्भि
र्वाह्लीकसिंधुतटवासिजनांश्च हन्यात् ।
आनर्त्तपौंड्रभिषजश्च तथा किरातान्
दृष्टोसुरोश्वयुजि भूरि सुभिक्षकृच ॥ ३० ॥

ग्रहण आसोज में हो तो कांबोज, चीन, यवन, बाल्हीक, सिन्ध, अनार्त्त, पौंड्र किरात—इन देशों में कष्ट, शिल्पी (बढ़ई आदि) तथा वैद्यों को पीड़ा और जगत में बहुत श्रेष्ट सुभिक्ष होवे ।

मास विशेष का फल—

अश्वयुजमाघकार्त्तिकभाद्रपदेष्वागतः सुभिक्षकरः ।
राहुरवशेषमासेष्वशुभकरो वृष्टिधान्यानाम् ॥ ३१ ॥

ग्रहण यदि भाद्रपद, आसोज, कार्तिक वा माघ में हो तो सुभिक्ष तथा धान्य मन्दा और जो मिगशिर, पोष, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येठ, आषाढ़ या श्रावण में हो तो वर्षा तथा धान्य का नाश होवे ।

सूर्य ग्रहण का विशेष मास फल—

सूर्य ग्रहण कार्तिक में हो तो सुभिक्ष, मिगशिर में हो तो रस कस तेज, पोष में हो तो धान्य तेज, माघ में हो तो मध्यम फल, फाल्गुन में हो तो धान्य बहुत तेज, चैत्र में हो तो धान्य संग्रह करने से शीघ्र लाभ, वैशाख में हो तो धान्य संग्रह करें, ज्येष्ट में हो तो धान्य अवश्य संग्रह करें, आषाढ में हो तो दुर्भिक्ष राज्यविग्रह, श्रावण में हो तो धान्य बेचने से लाभ, भाद्रवा में हो तो सुभिक्ष और आसोज में हो तो घृत तेल तेज होवे।३२॥

चन्द्र ग्रहण का विशेष मास फल—

चन्द्र ग्रहण कार्तिक में हो तो समुद्र में विग्रह, मिगशिर में हो तो धान्य संग्रह करने से ७ महिनों से लाभ, पोष में हो तो रस कस तेज, माघ म हो तो रस संग्रह करने से शीघ्र लाभ, फाल्गुन में हो तो आगे रस तेज, चैत्र में हो तो वर्षा काल में दुर्भिक्ष, वैशाख में हो तो सर्व वस्तु तेज, ज्येठ में हो तो सुभिक्ष इसलिये धान्य शीघ्र वेच दें, आषाढ में हो तो रस कस वस्तु तेज, श्रावण में हो तो सर्व वस्तु का नाश, भाद्रपद में हो तो धान्य बेचकर रस संग्रह करें और आसोज में हो तो कपास रूई सूत आदि तेज होवे । ३३ ॥

अधिक मास फल—

कदाचिदधिके मासे ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः ।
सर्वराष्ट्रभयं भंगः क्षयं यान्ति महीं भुजः ॥ ३४ ॥

ग्रहण अधिक मास में हो तो सर्व राष्ट्र का भंग तथा भय और राजाओं को क्लेश होवे ।

—x—

वार फल प्रकरण ।

रविवार फल—

अल्पं धान्याल्प मेघाश्च स्वल्पक्षीराश्च धनेवः ।
कलिंगदेश पीडा च ग्रहणे रविवासरे ॥ ३५ ॥

ग्रहण रविवार को हो तो वर्षा की कमी, धान्यकी उत्पत्ति अल्प, संवत् साधारण, गायों के दूध थोडा, राजाओं मे युद्ध, कलिंग देश में पीड़ा और घृत तैल के वेच देने से लाभ होवे ।

चन्द्रवार फल—

कर्पूरं मदिराश्चैव विनश्यन्ति वरांगनाः ।
यमुनातट पीडा च दुर्भिक्षं तस्कराद्भयम् ॥ ३६ ॥

ग्रहण चन्द्रवार को हो तो कपूर तथा मद्य का नाश, किसी श्रेष्ट स्त्री को कष्ट यमुना के किनारे के देशों में पीड़ा और धान्य तथा तेल के संग्रह करने से लाभ होवे ।

मंगलवार फल—

राजकुंजरपीडाच दुर्भिक्षं तस्कराद्भयम् ।
अवन्ति देशपीडाच मङ्गलेग्रहणं यदि ॥ ३७ ॥

ग्रहण मंगलवार को हो तो राज्यहाथी को कष्ट, दुर्भिक्षका भय, चोरों का तथा अग्निका उपद्रव और अवन्ति (मालवा) देशमें पीडा होव।

बुधवार फल—

पीत धातु महर्घत्वं सार धान्यं विनश्यति ।
कोशले छत्रभंगश्च ग्रहणे बुधवासरे ॥ ३८ ॥

ग्रहण बुधवार को हो, तो चावल आदि सार धान्यों का नाश, सोना पीतल आदि धातू तेज, कोशल देश में किसी राजाको पीडा और सुपारी तथा लाल वस्त्र के संग्रह करने से लाभ होवे।

गुरुवार फल—

सत्य शौचरतायेच चित्रवस्तु मकारकाः ।
पीडयेत्सिन्धु देशंच ग्रहणं गुरुवासरे ॥ ३९ ॥

ग्रहण गुरुवारको हो तो सत्य बोलने वाले, पवित्र रहने वाले, चित्र विचित्र वस्तु बनाने वाले तथा सिंध देश के रहने वाले पीडा भोगे और पीली, लाल व सुगन्धी वस्तु तथा तेल आदि सग्रह करनेमे लाभ होवे।

शुक्रवार फल—

राज्ञामन्तः पुरं चैव भृगुकच्छं विनाशयेत् ।
रजतमौक्तिकं वस्त्र ग्रहण भृगुवासरे ॥ ४० ॥

ग्रहण शुक्रवार को हो तो राज्य के महलों मे उपद्रव, भडौंच देश मे पीडा किन्तु अन्य देशों में सुख, चादी मोती तथा रेशम कपडे का भाव तेज और जगत् में मगलीक उत्सव अधिक होवे।

शनिवार फल—

सिन्धुतीरे च सौराष्ट महर्घं तस्कराद्भयम् ।
राजमन्त्रि विनाशार्थं ग्रहणे मन्दवासरे ॥ ४१ ॥

ग्रहण शनिवार को हो तो सिंध तथा सोरठ देश में धान्य तेज, चोरो का उपद्रव, राजके मन्त्रियो को कष्ट ज्वार तथा अफीम आदि काली वस्तु तेज और पीले व राते वस्त्र तथा ताबा आदि सग्रह करनेसे २ मास में लाभ होवे।

सूर्य ग्रहण विशेष वार फल—

सूर्य ग्रहण रविवार को हो तो गेहू चावल मुंग आदि धान्य तथा गुड का सग्रह करने से दो मास में बहुत लाभ होवे।४२॥

सोमवार को हो तो घृत तिल तेल मुग उडद तथा अफीम आदि काली वस्तु का सग्रह करने से लाभ होवे।४३॥

मगलवार को हो तो कपास रुई सूत कपडा चादी मोती सुपारी ना-

लेर मजीठ हींगलु घृत खांड गुड़ तांबा मुंगा गेहुं चावल आदि सर्व वस्तु का संग्रह करनें से साढे चार मास से बहुत लाभ होवे।४४॥

बुधवार को हो तो ज्वार बाजरी मोठ चने आदि धान्य सुपारी कपास कपड़ा लवंग अफीम आदि संग्रह करने से दो मास पीछे लाभ होवे।४५॥

गुरुवार को हो तो तिल तेल एरंड अलसी सरसों खारक काले वस्त्र संग्रह करने से चार मास पीछे लाभ होवे।४६॥

शुक्रवार को हो तो वायु का जोर वर्षा अधिक धान्य भाव साधारण और खेतियों की वृद्धि होवे।४७॥

शनिवार को हो तो तिल तेल तमाखू काली वस्तु तथा शस्त्र का संग्रह करने से बहुत लाभ होवे।४८॥

चन्द्र ग्रहण विशेष वार फल—

चन्द्र ग्रहण रविवार को हो तो अफीम और चांदी मन्दी होवे इसलिये पहिलेही से बेच दें।४९॥

सोमवार को हो तो रुई पहिले से संग्रह करने से २ मास में एक खंडी पर रु. २५) ३०) का लाभ होवे।५०॥

मंगलवार को हो तो रुपा तथा जसद राई के मेथी आदि के संग्रह करनेसे ३ मास पीछे लाभ होवे।५१॥

बुध वार को हो तो कसुंभा मजीठ तथा सोने के संग्रह से लाभ होवे।५२

गुरुवार को हो तो रुई के संग्रह करने से ४ मास में एक खंडीपर रु. २०) २५) का लाभ होवे।५३॥

शुक्रवार को हो तो, जगत् में आनन्द और रुई मन्दी हो जावेगी उस समय खरीदने से आगे ४ मास पीछे अच्छा लाभ होवे।५४॥

शनिवार को हो तो अलशी सरसों एरंडी तिल आदि का संग्रह करने से ६ मास पीछे लाभ होवे।५५॥

नक्षत्र फल प्रकरण।

अश्विनी नक्षत्र फल—

अश्वाश्च सेनापतिवैद्य सेवकास्तु रंगदक्षा वणिजश्च वारकाः।
रूपान्विताश्चाश्वहराः फलानि च प्रयान्तिपीडां ग्रहणे यदाश्विने॥५६॥

ग्रहण अश्विनी में हो तो घोड़े, सेनापति, वैद्य, नोकर, घोड़ों का पहिचानने वाले, व्यापारी, रखवाले, स्वरूपवान् घोड़ों को हरने वाले, और नारियल आदी फल—इनको पीड़ा होवे।

भरणी नक्षत्र फल—

येबन्ध ताडनवधा विरता मनुष्याः
क्रूरास्तथा रुधिर मांसभुजो पियेस्युः।
येचापि नीचकुलजाअपि सत्वहीना
स्तान् पीडयेत्तुपकणान् ग्रहणं भरण्याः॥ ५७॥

ग्रहण भरणी में हो तो वध बन्धन तथा ताडन करने वाले, मांस भक्षी, नीच कुलोत्पन्न, सत्वसे हीन और चने आदि तुष वाले धान्य—इनको पीड़ा होवे।

कृत्तिका नक्षत्र फल—

येसूत्रभाष्य कुशला अपिमन्त्र दक्षा
आकारिका द्विज पुरोहित कुम्भकाराः।
येचाग्निहोत्र निपुणा अपि मेघ दक्षा-
स्तान् पीडयेद्ग्रहणकं यदिकृत्तिकायाम्॥ ५८॥

ग्रहण कृत्तिका में हो तो सूत्र जानने वाले, भाष्य करने वाले, मन्त्र शास्त्री, खाँनों के दरोगे, ब्राह्मण, राज्यपुरोहि, कुंभार, अग्निहोत्री और वृष्टि विद्या जानने वाले—इनको पीड़ा होवे।

रोहिणी नक्षत्र फल—

वाणिज्यभूप धनिमु व्रतकर्षुकाश्च
तोयान्त शाकटिकगौ वृष शैलमान्याः।

भोगान्विताश्च घृतखंड वराङ्गनाश्च
पीडां प्रयान्ति यदिरोहिणिभे ग्रहःस्यात् ॥ ५९ ॥

ग्रहण रोहिणी में हो तो व्यापारी, राजा, धनवान्, श्रेष्ठ व्रत धारण करने वाले, खेती करने वाले, जल धान्य, गाडीवान्, गाय तथा बैल, पर्वत-वासी, नाना प्रकारके भोग भोगने वाले, घृत, खांड और वेश्या–इन को पीडा होवे।

मृगशिर नक्षत्र फल—

वस्त्राब्ज पुष्प फल रत्नविहं गमाश्च
गान्धर्व कामुकसुगन्धि वनेचराश्च।
येसोमपाश्चहरिणा अपिलेखहारा–
स्तान्पीडयेद्ग्रहणटकान् ग्रहणं मृगर्क्षे ॥ ६० ॥

ग्रहण मृगशिर में हो तो वस्त्र, कमल, फल, पुष्प, मोती आदि रत्न, पक्षी, गाने वाले, कामी, सुगन्धी वस्तु, वन में विचरने वाले, सोमपान करने वाले, हरण और लेखक–इनको पीड़ा होवे।

आर्द्रा नक्षत्र फल—

येचौर्य शाठ्यवबन्धन भेदकारा
मन्त्राभिचार कुशला परदार सक्ताः।
वैतालिका नृपतराः कटुकौषधानि
हन्याद्ग्रहोर्कशशिनो यदि रौद्रभेस्यात ॥ ६१ ॥

ग्रहण आर्द्रा में हो तो चोर, सट, बन्धव भेद करने वाले, मन्त्रप्रयोगसे शत्रुओं को दण्ड देने वाले पराई स्त्रियों से स्नेह रखने वाले, वैताल को वश में रखने वाले, नाचने वाले और कडवी औषधी–इनको पीड़ा होवे।

पुनर्वसु नक्षत्र फल—

ये सत्यशौच निरताःकुशला यशोन्विता
रूपान्विताश्च धन धान्य सुताश्चशिल्पिनः ॥

सेवायुताश्च वणिजः शुभधान्यमन्त्रिणः
पीडाम्प्रायन्त्यपि च ग्रहणं पुनर्वसौ ॥ ॥ ६२ ॥

ग्रहण पुनर्वसु में हो तो सत्यवादी, पवीत्र रहने वाले, चतुर, यश पानेवाले स्वरूपवान्, धन धान्यसे युक्त, कारीगर, नोकरी करने वाले, व्यापारी, चावल आदि धान्य और राज्य मन्त्रि—इनको पीड़ा होवे।

पुष्य नक्षत्र फल—

पुष्येतुशालीक्षु वनानि मन्त्रिणो भूपाश्च गोधूम यवाश्च साधवः॥
यज्ञेष्टिसक्ताः सलिलोपजीविनः पीडांमयांति ग्रहणेर्क सोमयोः॥६३॥

ग्रहण पुष्य में हो तो चावल, गुड़ खांड, स्त्री, राज्य मन्त्रि, राजा, गेहूं, जव, साधु, यज्ञ करने वाले, और जलसे जीविका करने वाले—इनको पीडा होवे।

अश्लेषा नक्षत्र फल—

शिल्पानि पन्नग विषाणिच कंदमूल
कीटोः परस्वहरणाभिरताश्च वैद्याः।
धान्यानिचैव सतुपानि च नाग वल्यो
नाशं मयान्ति यदि पर्व भुजंगभे स्यात् ॥ ६४ ॥

ग्रहण अश्लेषा में हो तो कारीगर, सर्प—सर्प का विष अफीम, भैंस आदि के सींग, कन्द मूल, कीट—रेसम, चोर, वैद्य, तुष वाले सर्व धान्य और नागरवेल के पान—इनको पीड़ा होवे।

मघा नक्षत्र फल—

पित्र्यर्क्षगं यदि भवेद् ग्रहणं तदानीम्
नारीद्विपश्च पितृभक्ति रताश्च शूराः।
शैलाश्रयाः फलभुजो वणिजश्चकोष्ठाः
पीडांमयान्ति धनधान्य युता रसाश्च ॥ ६५ ॥

ग्रहण मघामें हो तो स्त्रियों से द्वेष रखने वाले, पितृेश्वरों के भक्त, शूरवीर, पर्वत पर रहने वाले, फल भक्षण करने वाले, व्यापारी और कोष्ठागार–इनको पीड़ा होवे ।

पुर्वा फाल्गुनी नक्षत्र फल—

गर्वान्विताश्च शिल्पिपण्य कुमारिकाश्च
कार्पासतैल लवणान्यति सुन्दरांश्च ।
दुर्गाश्रयाश्च फलमाक्षिकयोषिताश्च
प्राक्फाल्गुनीजनित पर्वणियान्ति पीडाम् ॥६६॥

ग्रहण पुर्वा फाल्गुनीमें होतो गर्ववाले, शिल्पी, खरीदने वेचनेकी वस्तुएं, कुमारी कन्याएं, कपास रुई सूत कपड़ा, सर्व प्रकारका तेल, सर्व प्रकारका लवण, स्वरूपवान्, किलेमें रहनेवाले, नालेर आदि सम्पूर्ण फल, सहत और स्त्रियों–इनको पीड़ा होवे ।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र फलम्—

ये शौर्य मार्दवयुता विनयान्विताश्च
पाखंडिदानशुभकर्म रतानराश्च ।
शास्त्रप्रवीण शुभधान्य महा धनाढ्या
स्तान् पीडयेद्ग्रहणमुत्तर फाल्गुनीषु ॥ ६७ ॥

ग्रहण उत्तरा फाल्गुनीमें होतो पराक्रमी, दयालु, विनयवान् पाखंडी, दानव, शुभ कर्म करनेवाले, शास्त्री, चावल आदि धान्य और श्रीमन्त व धनाढ्य–इनको पीड़ा होवे ।

हस्त नक्षत्र फल—

तेजो युताश्च वणिजो रथिकुंजराश्च
पण्यानिशिल्पि तुष धान्यगजाधिरोहाः ।
चौराश्च शास्त्रकुशलाः परिपीडिताःस्यु–
र्हस्तेयदाग्रहण मिन्द्रिनयोस्तदानी ॥ ६८ ॥

ग्रहण हस्तमें होतो तेजस्वी, व्यापारी, रथीयोधा, हाथी, व्यापारकी वस्तुएं, कारीगर, चावल चने आदि तुषवाले धान्य, हाथीपर चढनेवाले, और पण्डित—इनको पीड़ा होवे।

चित्रा नक्षत्र फल—

शालाक्य चित्रमणि भूषण रागलेख्यः
गंधादियुक्तिकुशला अपितन्तुवायाः।
तान्पीडयेद्गणितकोविदराजधान्यां
चित्रारूयमेयदि भवेद्ग्रहणंरवीन्दोः ॥ ६९ ॥

ग्रहण चित्रामें होतो शस्त्र चिकित्सावाले वैद्य या सरजन—डाकदर, चित्रकार व फोटोग्राफर, जोंहोरी, रंगरेज, लेखक, अतर बनानेवाले, कपड़ा बुननेवाले, गणितज्ञ और उत्तम धान्य—इनको पीड़ा होवे।

स्वाति नक्षत्र फल—

धान्यानि वात बहुलानि खगा मृगाश्च
येतापसाश्चलघुसत्व तुरंगमाश्च।
येचापि पण्यकुशला चल सौहृदाश्च
स्वातौग्रहे च वणिजः परिपीडितास्युः ॥ ७० ॥

ग्रहण स्वातिमें होतो मटर चने आदि वायुकारक धान्य, गवादि पशु, मयुरादिपक्षि, तपस्वी, सत्वहीन, घोड़, व्यापारमें कुशल. चल चित्त-वाले और व्यापारियों को पीड़ा होवे।

विशाखा नक्षत्र फल—

आरक्त पुष्प फल शाखि जलानिमुद्गाः
कर्पासमाष चणकाः सुरयाग्निसक्ताः।
नाशंमयांसपिपुरंदरवह्निधिष्ण्ये
चंद्रार्कयोर्यदिमवेद्ग्रहण समग्रः ॥ ७१ ॥

ग्रहण विशाखा में होतो लाल रंगके पुष्प. लाल रंगके फल, लाल

शाखावाले वृक्ष, जल, मुंग, रुई, उड़द, चने, देवता और अग्निसे काम लेनेवाले इनको पीड़ा होवे किन्तु धान्यादि पदार्थ मन्दे हो जावे।

अनुराधा नक्षत्र फल—

शौर्यान्विताश्च गणनायक साधुगोष्ठी
यानप्रसक्त हृदया अपिसाधवश्च।
सस्यं शरद्भवमपि प्रशमं प्रयान्ति
मैत्राख्य जो ग्रहण मिन्द्रिनयोर्यदास्यात् ॥ ७२ ॥

ग्रहण अनुराधामें होनो पराक्रमी, बहुतसे मनुष्योंके स्वामि, साधुओंकी सत्संग करनेवाले, वाहनपर चढ़ने के सौकीन, साधु महात्मा, और सरद ऋतुमें उत्पन्न होनेवाले चावल मक्की ज्वार मुंग तिल आदि धान्य—इनको पीड़ा होवे।

ज्येष्ठा नक्षत्र फल—

अत्यन्त शौर्यकुलवित्त यशोन्विताश्च
सेनाधिपानृपतयो विजिगीषवोये।
ताम्रादिकं परधनापहृताश्चयेते
पीडांप्रयान्ति यदि पर्व सुराधिपर्क्षे ॥ ७३ ॥

ग्रहण ज्येष्ठामें होतो अधिक पराक्रमी, कुलीन, धनवान्, यशस्वी, सेनापति, राजा, शत्रुओंको जीतनेकी इच्छावाले, तांबा आदि धातु और चौर—इनको पीड़ा होवे।

मूल नक्षत्र फल—

बीजानि चाति धनयुक्त गणाधिपाश्च
पुष्पौषधानि भिषजः फलमूलवार्ता।
येचापि मूल फलवार्तजनाश्चतेषां
पीडाकरं रविशशि ग्रहणं च मूले ॥ ७४ ॥

ग्रहण मूल में हो तो सर्व प्रकार के बीज, अति धनवान्, बहुत से

मनुष्यों में मुख्य, पुष्प, ओषधी, वैद्य, सर्वफल, कन्दमूल, और इन वस्तुओंसे अजीविका करनेवाले—इनको पीड़ा होवे।

पूर्वाषाढ नक्षत्र फल—

ये सत्यशौच निरता मृदवो धनाढ्याः
पानीय मार्गगमना जल जीवकाश्च।
तोयाद्भवानि कुसुमानि फलानि चैव
नश्यन्ति पर्वणि च सेतुकराजलर्क्षे ॥ ७५ ॥

ग्रहण पूर्वाषाढा में होतो सत्यवादी, शौचयुक्त, सुशील, धनाढ्य, समुद्र आदि जल सिंचन करनेसे उत्पन्न होनेवाले फल पुष्प और पुल बनानेवाले—इनको पीड़ा होवे।

उत्तराषाढा नक्षत्र फल—

तेजस्विन स्तुरगकुंजर मल्लयोधा
ये स्थावराजगतियन्त्रिक देवभक्ताः।
भोगान्विताश्च मनुजाः परिपीडिताःस्युः
क्षेमंसुभिक्षं मिहवैश्वगतोग्रहश्चेत् ॥ ७६ ॥

ग्रहण उत्तराषाढा में हो तो तेजस्वी, घोड़े, हाथी, मल्ल—कुस्ती करनेवाले, योधा—शूरवीर, स्थावर—वृक्षादि, यन्त्र बनानेवाले, देवताओंके भक्त, नाना प्रकारके भोग भोगनेवाले—इनको पीड़ा किन्तु जगत्में क्षेम कल्याण तथा शुभिक्ष होवे।

श्रवण नक्षत्र फल—

मायाविनित्योद्यम सत्यधर्मा उत्साहिनो भाग वतोक्त धर्माः।
धान्यं द्विजाकर्मसुयेसमर्था स्तान्पीडयेचेद्ग्रहणंश्रुतौस्यात् ॥७७॥

ग्रहण श्रवणमें हो तो माया फैलानेवाले, नित्य उद्यम करनेवाले, सत्य धर्मि, उत्साही, भागवत पाठी, गोधूमादि धान्य और वेदिक कर्म करनेवाले ब्राह्मण—इनको पीड़ा होवे।

धनिष्ठा नक्षत्र फल—

क्लीवाश्च मानरहिताश्चल सौहृदाश्चये
स्त्रीद्वेषिणः शमपरा बहुवित्तयुक्ताः ।
ये चापिदान निरताः परिपीडिताःस्युः
श्चौराग्निभिश्च वसु ग्रहणं यदिस्यात् ॥ ७८ ॥

ग्रहण धनिष्ठामें हो तो नपुंसक, मानरहित, चल वित्तवाले, स्त्रियों से द्वेष रखनेवाले, शमपरायण, बहुत वित्तवाले और दानी इनको पीड़ा तथा चोरों का व अग्निका उपद्रव होवे।

शतभिषा नक्षत्र फल—

येमत्स्य बंधनिरता अपिपाश हस्ता
जीवाश्च ये जलचरा जलजाह्याश्च ।
येशौंडिका रजकसौकरि शाकुनाश्च
नाशंप्रयान्ति वरुणर्क्षगतो ग्रहश्चेत् ॥ ७९ ॥

ग्रहण शतभिषामें हो तो मच्छी पकड़नेवाले, पाश डालनेवाले, जलचर जन्तु, कमल, घेड़ि, कलाल आदि मद्य बनानेवाले, धोबी, सौकरीक और पक्षीघाती—इनको पीड़ा होवे।

पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र फल—

कीनाशहिंस्र पशुपालक तस्कराश्च
धर्मव्रतैर्विरहिताः शठनीचचेष्टाः ।
ये चापि युद्धकुशला मनुजा विनाशं
पूर्वासु पर्वयदि भद्रपदासुयान्ति ॥ ८० ॥

ग्रहण पूर्वा भाद्रपदामें हो तो कीनाश, हिंसा करनेवाले, पशु पालनेवाले, चोर अधर्मि, व्रतरहित, सठ, नीच प्रकृतिवाले और युद्ध करनेमें कुशल—इनको पीड़ा होवे।

उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र फल—

विप्रामश्च विभव दानरतास्तपोन्विताः
पाखंडिनः क्रतुरताश्रमिणो नरेश्वराः ।
तान् शारधान्य महितान् विनिहन्ति पर्व
चन्द्रार्कयोभवति भद्रपदोत्तरासु ॥ ८१ ॥

ग्रहण उत्तरा भाद्रपदामें हो तो ब्राह्मण, अधिक वैभववाले, महादानी, तपस्वी, पाखंडी, यज्ञ करनेवाले, आश्रमी, राजा, और शार धान्य श्रेष्ठ पुरुष—इनको पीड़ा होवे ।

रेवती नक्षत्र फल—

तोयोद्भवानि कुसुमानि फलानि गन्धाः
शंखांबुजानिलवणं च सुगन्धि पुष्पम् ।
नौकर्णधार वणिजो मणिमौक्तिकानि
नश्यन्ति पौष्णभगते ग्रहणं रवीन्द्वोः ॥ ८२ ॥

ग्रहण रेवतीमें हो तो जलमे उत्पन्न होनेवाले फल पुष्प, सुगन्धी द्रव्य, शंख, कमल, लवण, सुगन्धीवाले पुष्प, नवीन करणधार, व्यापारी और मणि तथा मोती—इनको पीड़ा होवे ।

नक्षत्र वश से धान्यादि की तेजी मन्दी—

अश्विन्यां पीडितायां स्यात् मुद्गादीनां महर्घता ।
भरण्यां श्वेत वस्त्रेभ्यो लाभं मासत्रये भवेत् ॥ ८३ ॥
कृतिकायां हेमरूपा प्रवालमणि मौक्तिकम् ।
सग्रहीतं लाभदायी मासे च नवमे स्मृतम् ॥ ८४ ॥
रोहिण्यां सूत्रकर्पास संग्रहो लाभदायकः ।
दश मासान्तरे मोक्षः सोमवेधा न चेदिह ॥ ८५ ॥
मृगशीर्षेपि मंजिष्ठा लाक्षा क्षारः कुसुम्भकम् ।
महर्घं द्वादशमासान्ते लाभदं तु यथोचितम् ॥ ८६ ॥
घृतं महर्घमार्द्रायां लाभदं मासपञ्चके ।

तैलाल्लाभः पुनर्वसौः मास पञ्चकतः परम् ॥ ८७ ॥
पुष्येमासे त्रिभिर्लाभो भवेद्गोधूमसंग्रहः ।
आश्लेषायां तु मुद्गेभ्यः माप्तिः स्यान्मासपञ्चके ॥ ८८ ॥

ग्रहण अश्विनी नक्षत्र में हो तो मुंग आदि तेज, भरणीमें हो तो श्वेत कपडा संग्रह करने से ३ महिनों से लाभ, कृत्तिका में हो तो सोना चांदी प्रवाल मोती तथा मणी आदिके संग्रह करने से ९ महिनों के बाद लाभ, रोहिणी में (सूर्य ग्रहण) हो तो कपास रुई सूत आदि के संग्रह करने सें १० महिनों के बाद लाभ किन्तु चन्द्रमा के ग्रहण में यह फल नहीं, मृगशिर में हो तो मजीठ लाख क्षार कसुम्भा आदि के संग्रह करने से १० महिनों के बाद लाभ, आर्द्रा में हो तो घृत के संग्रह करनेसे ९ मास में लाभ, पुनर्वसु में हो तो तैल के संग्रह करने से ९ महिनों के बाद लाभ, पुष्य में हो तो गेहूं के संग्रह करने से ३ महिनों से लाभ, और अश्लेषा में होतो मुंग संग्रह करने से ५ महिनों से लाभ होवे।

मघा चतुष्टये चोलाचणकः खलुतुष्टये ।
चित्रायां च युगन्धर्या मासोलाभद्वयान्तरे ॥ ८९ ॥
त्रिपञ्चनवभिर्मासैः स्वातौ लाभ स्तथातया ।
विशाखायां कुलित्थेभ्यः षण्मासे लाभ सम्भवः ॥ ९० ॥
राधायां कोद्रवाल्लाभो मासैर्नवभिराप्यते ।
ज्येष्ठायां गुडखण्डादेः पञ्चमासे धनोदयः ॥ ९१ ॥

ग्रहण मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी वा हस्त में हो तो चँवले तथा चनों के संग्रह से लाभ, चित्रा वा स्वाति में हो तो जवार वा बाजरी के संग्रह से २ महिनों से लाभ, विशाखा में हो तो कुलथी के संग्रह से ६ महिनों से लाभ, अनुराधा में हो तो कोंदो धान्य के संग्रह से ९ महिनों से लाभ और ज्येष्ठा में हो तो गुड़ तथा खांड के संग्रह से ५ महिनों से लाभ होवे ।

तन्दुलेभ्यस्तथामूले पूषायां श्वेतवस्त्रतः ।
ऊषायां श्रीफलात्पुंग्या सर्वत्र मास पञ्चकम् ॥ ९२ ॥
श्रवणे तुवरीलाभः धनिष्ठायां तु माषतः ।
चणकेभ्योति वारुण्यां तेभ्यः पूभानिपीडने ॥ ९३ ॥
लाभस्त्रिमासि निर्दिष्ट उभायां लवणादितः ।
मास षट्काछ्लाभदृष्टो रेवत्यां मुद्गमाषतः ॥ ९४ ॥

ग्रहण मूल नक्षत्र में हो तो चावलों के संग्रह से ५ महिनों से लाभ, पूर्वाषाढा में हो तो श्वेत वस्त्रों के संग्रह से ५ महिनों से लाभ, उत्तराषाढा में हो तो नालेर तथा सुपारी के संग्रह से ५ महिनों से लाभ, श्रवण में हो तो तुहरे के संग्रह से लाभ, धनिष्ठा में हो तो उड़दों के संग्रह से लाभ, शतभिषा वा पूर्वाभाद्रपदा में हो तो चनों के संग्रह से लाभ, उत्तराभाद्रपदा में हो तो लवण आदि के संग्रह से ३ महिनों से लाभ और रेवती में हो तो मुंग तथा उड़दों के संग्रह करने से ६ महिनों से लाभ होवे ।

सूर्य ग्रहण नक्षत्र फल—

आदित्य ग्रासकाले तु दुर्भिक्षं प्रायसो भवेत् ।
तत्तिथि धिष्णवाच्यानि महर्घाणी भवन्ति ही ॥ ९५ ॥

सूर्य का ग्रहण हो तब प्रायः दुर्भिक्ष होता है और उस समय जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र के अक्षरों के नामवाली वस्तुएं भी महँगी हो जाति है ।

नक्षत्रानुसार कूर्म चक्रोक्त देश फल प्रकरण ।

नक्षत्रत्रय वर्गैराग्नेयाद्यैर्व्यवस्थितैः नवधा ।
भारतवर्षे मध्यात्प्रागादि विभाजिता देशाः ॥ ९६ ॥

कृत्तिका आदि २७ नक्षत्रों के ९ विभाग करे फिर इस भारत देश के मध्य से लेके पूर्वादि क्रम से सम्पूर्ण भूमण्डल के ९ भाग करके कृत्ति-

कादि नक्षत्रों के ९ भाग बांट दे जैसे—कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, ये ३ मध्य देशके; आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्प ये ३ पूर्व के; अश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी ये ३ अग्निकोण के; उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्राये ३ दक्षिण के; स्वाति, विशाखा, अनुराधा ये ३ नैर्ऋत्यकोण के; ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा ये ३ पश्चिम के; उत्तराषाढा श्रवण, धनिष्ठा ये ३ वायव्यकोणके; शतभिषा, पूर्वा भाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा ये ३ उत्तर के और रेवती, अश्विनी, भरणी ये ३ ईशान कोणके देशोंके है ।

ग्रहण जिस दिशा के नक्षत्र पर हो उस दिशा के देशोंको दुर्भिक्ष युद्ध महामारी चोर अग्नि आदि उपद्रवों की पीड़ा होवे ।

—x—

ब्राह्मणादि जाति नक्षत्र-प्रकरण ।

ब्राह्मणादि जाति नक्षत्र निर्णय—

पूर्वात्रयं सानलमग्रजानां राज्ञान्तु पुष्येण सहोत्तराणि ।
सपौष्णमैत्रं पितृदैवतं च प्रजापतेर्भं च कृषीवलानाम् ॥९७॥
आदित्य हस्ताभिजिदाश्विनानि वणिक्जनानां प्रवदन्तिभानि ।
मूलात्रिनेत्रानिल वारुणानि भान्युग्रजातेः प्रभविष्णुतायाः ॥९८॥
सौम्येन्द्र चित्रावसु दैवतानि सेवाजनास्वाम्य मुपागतानि ।
सार्पं विशाखा श्रवणा भरण्याश्चाण्डल जातोरभिनिर्दिशन्ति ॥९९॥

कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा ये ४ नक्षत्र ब्राह्मणों के; पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा ये ४ क्षत्रियों के; रोहिणी, मघा, अनुराधा, रेवती ये ४ खेती करनेवालों के; अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, अभिजित् ये ४ वैश्यों—व्यापारियो के; आर्द्रा, स्वाति, मूल,

* इसका विस्तारपूर्वक निर्णय मेरे प्रकाशित कीये हुये 'सर्वतो भद्रचक्र (त्रैलोक्य दीपक)' ग्रन्थके 'कूर्मचक्र प्रकरण' में कीया है ।

शतभिषा ये ४ उग्र जातिवालों के; मृगशिर, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा ४ सेवा–नोकरी करनेवालों के; और भरणी, अश्लेषा, विशाखा, श्रवण ४ नक्षत्र चांडाल जाति के हैं।

ग्रहण जिस जातिके नक्षत्र पर हो उस जाति के मनुष्यों को अनेक प्रकार से कष्ट पीड़ा होवे।

§नक्षत्रानुसार मण्डल फल प्रकरण।

अत्रापि केचिज्जगदुर्विशेषं वायव्य हौताशन वारुणेन्द्राः।
स्युसप्तर्क्षभवास्तु वर्गाश्चत्वार एषां च पृथक् फलानि॥१००॥

जगत् का विशेष शुभाशुभ फल जानने के लिये महर्षियोंने अश्विन्यादि रेवती पर्यन्त अभिनित् सहित २८ नक्षत्रोंमें के ७। ७ नक्षत्रों का (१) वायु, (२) अग्नि, (३) वारुण और (४) माहेन्द्र नामक चार मण्डल माने हैं।

वायु, अग्नि, वारुण, व माहेन्द्र मण्डल नक्षत्र ज्ञान—

आर्य्यमणचित्रदिति मैन्दवाश्वि स्वात्योर्कभं चेतिगणोनिलस्याः।
याम्याजपादाग्नि भतिष्यभाग्य मघाविशाखा हुतभुग्गणोयम्॥१०१॥
तोयेशाहिर्बुध्न्यरक्षोम्बुपूषा सार्पेशानां वारुणनीति भानि।
मैत्र्यं ब्राह्मयं वैष्णवं वासवेन्द्रो वैश्वं चेन्द्रोयं भवर्गोऽभिजिच्च॥१०२

अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, ये ७ नक्षत्र वायु मण्डल के हैं।

भरणी, कृत्तिका, पुष्प, मघा, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद ये ७ नक्षत्र अग्नि मण्डल के हैं।

---

§ मण्डलोंका विशेष निर्णय मेरे बनाये हुये 'वृहदर्घ मार्त्तण्ड' ग्रन्थ के 'संक्रान्ति प्रकाश' नामक अंक में कीया गया है।

आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, पूर्वाषाढा, शतभिषा, उत्तरा भाद्रपदा, रेवती, ये ७ नक्षत्र वारुण मण्डल के हैं।

रोहिणी, अनुराधा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, अभिजिन, श्रवण, धनिष्ठा, ये ७ नक्षत्र माहेन्द्र मण्डल के हैं।

वायु मण्डल फल—

वायुर्गणे कोपि यदोपसर्गो भवेत्तदानी पवनोतिचण्डः।
सिक्ताग्रहो वीरहतोरणानां लोके नृपे चापि महानधर्मः ॥१०३॥

ग्रहण के समय वायु मण्डल में का नक्षत्र हो तो प्रचंड वायु का वेग अधिक, युद्ध करने वाले योधाओं को कष्ट पीड़ा, और राजा तथा प्रजा को दुःख क्लेश होवे।

अग्नि मण्डल फल—

वह्निगणे नेत्ररुजोतिसार वृष्ट्यार्थहानिर्ज्वलनप्रकोपः।
गावोऽल्पदुग्धास्तरवोऽफला स्युः गर्भप्रपाताश्च नितंबिनीनाम्॥१०४॥

ग्रहण के समय अग्नि मण्डल में का नक्षत्र हो तो अग्नि का कोप, नेत्र तथा अतिसार रोगों का उपद्रव, वर्षा का नाश, गायों के दूध अल्प, वृक्षों के फलों की हानी और स्त्रियों के गर्भपात होवे।

वारुण मण्डल फल—

गावोवहुक्षीर घृताफलाढ्या वृक्षाः प्रजाक्षेमसुभिक्षयुक्ताः ॥
मेघाः प्रभूतांवुमुचो भवंति वर्गे जलेशस्य त सोपिवर्गे ॥१०५॥

ग्रहण के समय वारुण मण्डल में का नक्षत्र हो तो वर्षा अधिक, सुभिक्ष की वृद्धि वृक्षों के फल फूल अधिक, गायों के दूध तथा घी की वृद्धि प्रजा में आनन्द और राजाओं में शान्ति होवे।

माहेन्द्र मण्डल फल—

महेन्द्रवर्गे वनितासुसौख्यं प्रजाश्च सर्वे मुदिताभवन्ति।
निकामवर्षा मघवाधरित्री प्रभूतसस्याधिगतेति विंद्यात् ॥१०६॥

ग्रहण के समय माहेन्द्र मण्डल में का नक्षत्र हो तो वर्षा समयानुकूल, खेतियों की वृद्धि, स्त्रियों को सुख, और राजा प्रजा को आनन्द होवे।

वायु आदि मण्डलों का फल पाक काल—

त्रिमासिकं स्यादाग्नेयं वारुणं पंचमासिकम्।
माहेन्द्रं चैववायव्यं सप्तरात्रं फलं भवेत्॥ १०७॥

वायु मण्डल का ७ दिनसे, अग्नि मण्डल का ३ मास मे, वारुण मण्डल का ५ मास से और माहेन्द्र मण्डल का ७ दिन से शुभाशुभ फल ऊपर लिखे अनुसार होता है।

मण्डलोंकी शान्ति करणेकी आवश्यकता—

आग्नेयी कारयेच्छांतिं शांतिं कुर्याच्च वारुणीम्।
वायव्यां शांतिमिच्छेत माहेन्द्रीं कारयेदपि॥ १०८॥

वायु, अग्नि, वारुण और माहेन्द्र—इन मण्डलों में से जिस मण्डल में ग्रहण आदि कोईभी उत्पात हो तो उसकी शान्ति कर देने से फिर अशुभ फल का नाश हो जाता है॥

विष्कुम्भ योग फल—

विष्कुंभयोगे ग्रहणं रविद्रौर्ये मानवाः शोभनबुद्धियुक्ताः।
तान् पीडयेद्राजिगजान् हयांश्च दुर्गाणि लोकेच तदा भयंस्मात्॥१०९

ग्रहण विष्कुंभ योग में हो तो श्रेष्ठ बुद्धिवाले, घोड़े, हाथी, बैल इनको पीड़ा और किले में रहनेवाले लोकों को भय होवे।

प्रीतीयोग फल—

चेत्प्रीतियोगे ग्रहणं तदानीं परस्परं मित्रविरोधकृत्स्यात्।
भेदं च राज्ञां सहमंत्रिभिश्च वरांगनाभिर्विरहं करोति॥११०॥

ग्रहण प्रीतियोग में हो तो मित्रों के परस्पर वैर, राजाओं और मन्त्रियों में फूट और श्रेष्ठ स्त्रियों से भी कलह होवे।

आयुष्मान योग फल—

योगे तथायुष्मति चेत् ग्रहः स्यात् पीडातदानीं द्विचतुष्पदानाम् ।
योद्धास्तथा ये चिरसंग्रहाश्च तेषां महद्देशभयं च विद्यात् ॥१११॥

ग्रहण आयुष्मान योग में हो तो मनुष्य, पशु, पक्षी आदि को पीड़ा; और योधाओं को, बहुत समय से संग्रह करनेवालों तथा देश को भय होवे ।

सौभाग्य योग फल—

सौभाग्ययोगे ग्रहणं यदा तदा निहंति युनः पुरुषांश्च कामिनः ।
सौभाग्ययुक्ता वरयोषिताश्च यां सुवस्त्रसौरभ्यगुणानुलेपनम् ॥११२॥

ग्रहण सौभाग्य योग में हो तो कामी पुरुषों को, सौभाग्य युक्त श्रेष्ठ स्त्रियों को पीड़ा और वस्त्र तथा सुगंधी पदार्थों का नाश होवे ।

शोभन योग फल—

योगे रवींदोर्ग्रहणं च शोभने महाक्षितीशांच शुचीन् सुमंत्रिणः ।
ज्योतिर्विदो हंति च वेदपारगान् अवन्तिदेशे परिपीडनं भवेत् ॥११३

ग्रहण शोभन योग में हो तो महाराजा, राज्यमन्त्रि, ज्योतिषी, वेदपाठी और अवन्ति (मालवा) देश—इनको पीड़ा होवे ।

अतिगण्ड योग फल—

ग्रहो यदि स्यादतिगंडयोगे तदा युवानः पुरुषाश्च वेश्या ।
नृपास्त्वमात्याः शुचयो नराश्च काशी तथोपद्रवपीडिता स्युः॥११४।

ग्रहण अतिगण्ड योग में हो तो युवान पुरुष, वेश्या, राजा, राज्यमन्त्रि, पवित्र रहनेवाले और काशी देश—इनको पीड़ा होवे ।

सुकर्मा योग फल—

सुकर्मयोगे ग्रहणं यदा भवेत् क्षितीशदैवज्ञसुराश्च मागधाः ।
सुवर्णकाराश्च सुकर्मकारिणः किरातदेशा ह्युपयांति पीडन् ॥११५॥

ग्रहण सुकर्मा योग में हो तो राजा, दैवज्ञ, देवता, मघद देशवासी, सुनार, सत्कर्म करनेवाले और किरात देश—इनको पीड़ा होवे।

धृती योग फल—

योगे धृतौ रविशशिग्रहणं यदा
सायद्वादित्रगीतकुशलापि च नृत्यकारान् ॥
ये काष्टकर्मकुशलाः परयाचकाश्च
कर्णादि भूषणयुताः परिपीडयेतान् ॥११६॥

ग्रहण धृतियोग में हो तो गाने बजाने तथा नृत्य करनेवाले, लकड़ी का काम करनेवाले, दूसरों से याचना करनेवाले और कानों में आभूषण पहरनेवाले—इनको पीड़ा होवे।

शूल योग फल—

योगे च शूले ग्रहणे विनाशमायांति वैद्या जलजंत्रवाहाः।
महेन्द्रजालप्रवरा नाशये कैवर्त्तकाश्चा पि स पूर्वदेशाः ॥११७॥

ग्रहण शूल योग में हो तो वैद्य, जल मे यन्त्र चलानेवाले, इन्द्रजाल के खेल करनेवाले, कैवर्त्त देशवासी—इनको पीड़ा होवे।

गण्ड योग फल—

दृश्येत राहुर्यदि गंडयोगे पीडां तदा युद्धकराः प्रयांति ॥
ये योगिनो मंत्रविदो गजाश्च देशाश्च येदक्षिणदिक्स्थितास्ते ११८

ग्रहण गण्डयोग में हो तो युद्ध करनेवाले, योगी, मन्त्रवादी, हाथी और दक्षिण देशवासी—इनको पीड़ा होवे।

वृद्धि योग फल—

ग्रहो रवींद्वोर्यदि वृद्धियोगे तदा कुलीनान्नृपतीन् प्रपीडयेत्।
कुटंबिनो ये च तथोत्कटाश्च कांबोजदेशाधिपतीन्निहंति ॥११९॥

ग्रहण वृद्धि योग में हो तो कुलवानों, राजा, कुटुंबवाले, उत्कट पुरुष और कांबोज देशवासी—इनको पीड़ा होवे।

ध्रुव योग फल—

ध्रुवाख्ययोगेपि पुराणवाचकान् व्यासान्निहन्यादपि देवनायकान्।
ये हेममार्गोत्तरगामिनश्च तान् जनान् रविंद्रोर्ग्रहणं यदा भवेत्॥१२०

ग्रहण ध्रुव योग में हो तो पुराण पाठी, कथा व्यास, देवताओं के पूजारी और हेमालय की ओर से उत्तरदिशिकी यात्रा करनेवाले—इनको पीड़ा होवे।

व्याघात योग फल—

ये मद्यमांसाभिरताश्च लोलुपा ये तस्करा ये पि च जीवघातकाः।
निपीडयेत्तान् गिरिवासिनो जनान् व्याघातयोगे रविशीतगुग्रहः १२१

ग्रहण व्याघात योग में हो तो मद्य पीनेवाले, मांस खानेवाले, स्त्री-लोलुप, चोर, जीवघाती और पर्वतपर रहनेवाले—इनको पीड़ा होवे।

हर्षण योग फल—

मिष्टान पानाभिरताश्च कामिनः सौभाग्ययुक्ताःसुखिनश्च ये जना।
निपीडयेत्तान भृगुकच्छवासिनो योगे यदा हर्षणनामनिग्रहः ॥१२२॥

ग्रहण हर्षण योग में हो तो मिष्टान खानेवाले, मधुर रस पीनेवाले, कामी, सौभाग्य युक्त, सुखी, और भृगुकच्छ—भडोंच देशवाशी—इनको पीड़ा होवे।

वज्र योग फल—

ये काष्टकर्मकुशलाश्च धनुर्द्धरा
ये गानकर्मकुशलाः परिपीड्येत्तात्।
ये कौशले जनपदे निवसंति लोका
स्तांश्चापि वज्रयुजि चे ग्रहणं रवींद्रो॥१२३॥

ग्रहण वज्र योग में हो तो लकड़ी का काम करनेवाले, धनुप रख-नेवाले, गानेवाले और कौशल देशके मनुष्य—इन को पीड़ा होवे।

सिद्धि योग फल—

ये धातुकर्मकुशलाश्च तपस्विन योगिनः
कापालिकाश्च तिलका हरमेकलाश्च।
वांछन्ति सिद्धिमपि ये परिपीडयेत्तान्
योगे यदा ग्रहणमिर्द्दनयोश्च सिद्धौ ॥ १२५ ॥

ग्रहण सिद्धि योग मे हो तो धातु के बरतन बनानेवाले, तपस्वी, योगी, कपाली—कनफटेनाथ, मन्त्रादि की सिद्धि चाहानेवाले और तिलक हर तथा मेकल देश में रहनेवाले—इनको पीड़ा होवे।

व्यतिपात योग फल—

ये चित्रकारा अपि रंगकार ये पूर्ववृत्तांतकथानकाश्च।
किरातदेशाः परपीडिताः स्युर्ग्रहो यदा स्याद्व्यतिपातयोगे१२५।

ग्रहण व्यतिपात योग में हो तो चित्रकार, रंगकार, प्राचीन इति-हासवेत्ता, तथा किस्से कहानिये कहनेवाले और कीरात देशवासी—इनको पीडा होवे।

वरियाण योग फल—

योगे वरीयसि यदि ग्रहणं रवींद्वोः
संपीडयेन्नृपयुता वरयोषिताश्च।
ये भोगिनो नरवरा अपि यौवनस्था
स्तान् कौंकण जनपदं त्वचिरात्तदानीम् ॥ १२६ ॥

ग्रहण वरियाण योग में हो तो राजा, श्रेष्ट स्त्री, भोगी पुरुष, उत्तम मनुष्य, यौवन अवस्थावाले और कौकण देशवासी—इनको पीड़ा होवे।

परिघ योग फल—

नंदाश्च गोपा ऋषभश्च भृत्यास्तुरंगमा ये वनवासिनश्च।
ये जीवहिंसानिरताश्च तेषां पीडा ग्रहेस्यात् परिघाख्ययोगे।१२७।

ग्रहण परिघ योग में हो तो नन्द, गोप, ऋषि, नोकर, घोडोंवाले, वनवासी, और जीव हिंसा करनेवाले–इनको पीड़ा होवे ।

शिव योग फल––

ये होमपूजानिरताश्च शैवा ये चापि षड्दर्शनवादिनश्च ।
संपीडयेत्तानपि मध्यदेशं ग्रहो यदिस्याच्छिवनाम्नियोगे ॥१२८॥

ग्रहण शिव योग में हो तो होम करनेवाले, देव पूजारी, शिव के भक्त, षड्दर्शनवादी और मध्य देश–इनको पीड़ा होवे ।

सिद्ध योग फल––

धनुर्द्धराश्चैव तपस्विनश्च ये योगिनो भिक्षुकसिद्धसंघाः ।
हन्याच्चतान् काहरमेकलांश्च सिद्धाख्ययोगे ग्रहणं रवींदोः॥१२९॥

ग्रहण सिद्ध योग में हो तो धनुष्य रखनेवाले–मेने भील आदि, तपस्वी, योगी भिक्षुक, साधुओ की जमात और काहर तथा मेकल देश–इनको पीड़ा होवे ।

साध्य योग फल––

उपवासपराश्च साधवः शुचयः सत्यरतावणिग्जनाः ।
स्मृतिवेदविदश्च वाडवा युजि साध्ये ग्रहणं निहंति तान् ॥१३०॥

ग्रहण साध्य योग में हो तो उपवास करनेवाले, साधु, पवीत्र रहनेवाले, सत्यवादि, व्यापारी, स्मृति तथा वेदके जाननेवाले और पण्डित–इनको पीड़ा होवे ।

शुभ योग फल––

योगे शुभे ग्रहणमिद्रिनयोर्यदास्यात्
पीडां प्रयांति शुभकर्मकरानरा ये ।
श्रेष्ठाः स्वजातिषु च भर्तृपराश्च नार्ये
रेवातटस्थितजना अपिवोत्तमा ये ॥ १३१ ॥

ग्रहण शुभ योग में हो तो शुभ कर्म करनेवाले, खजानेमें में श्रेष्ठ, पतिवृत्ता स्त्रियें, उत्तम पुरुष और नरबदा के किनारे के देश म रहनेवाले मनुष्य—इनको पीड़ा होवे।

शुक्ल योग फल—

शुक्लाख्यायोगे ग्रहणं यदा स्यात्कर्पूरशुक्लांबरपुष्पकाराः।
विनाशमायांति शुभाः स्त्रियश्च धनक्षयश्चाप्यमृतक्षयश्च ॥ १३२॥

ग्रहण शुक्ल योग में हो तो कपूर, श्वेत वस्त्र पुष्पों से जीविका करनेवाले माली आदि, तथा शुभ स्त्री इनको पीड़ा और जगत् में धन तथा अमृत का क्षय होवे।

ब्रह्म योग फल—

ये देवार्चनहोमजाप्यनिरता ये स्वक्रियापालकाः
सद्धर्मानुरताश्च वाडववरा ये वेदपारंगमाः।
तान् सर्वान्परिपीडयेदपि तथा ये लोकमान्याजनाः
सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रहो यदि भवेद्ब्रह्माख्ययोगे तदा ॥१३३॥

ग्रहण ब्रह्म योग में हो तो देवपूजा में रत, होम करने में आशक्त, जाप्य करनेवाले, स्वक्रिया पालक, सद्धर्म कर्त्ता, पण्डित, वेदान्ती, और जगत् में माननीय पुरुष—इनको पीड़ा होवे।

ऐन्द्र योग फल—

महाबलिष्टाश्च महानरेन्द्रा विनाशमायांति धनुर्द्धराश्च।
भवंतियुद्धानि महांतिचैन्द्रे योगे यदा स्याद्ग्रहण रवींदो ॥१३४॥

ग्रहण ऐन्द्र योग में हो तो महाबलवान्, महाराजा, धनुष्यधारी योधा—इनको पीड़ा और राजाओं में युद्ध होवे।

वैधृति योग फल—

व्यापारिणश्च धनधान्यचतुष्पथानि
सर्वाकराश्च सहभांडतुलाश्रितैश्च।

नश्यंति सागरजलोद्भवभूषणानि ।
चंद्रार्कपर्व यदि वैधृतिनामयोगे ॥ १३५ ॥

ग्रहण वैधृति योग में हो तो व्यापारी, धन, धान्य, चोपाये पशु, सर्व प्रकारकी खाने, तोलसे बिकनेवाली सम्पूर्ण वस्तुए और समुद्र के जलसे उत्पन्न होनेवाली वस्तुऐं तथा मोतियों के आभूषण इनको पीड़ा होवे।

राशि फल प्रकरण।

मेष राशि फल—

ये पांचालाः शूरसेनाः कलिंगाः कांबोजांध्रा शस्त्रवार्त्ताकिराताः
येषां वृत्तिर्वह्निना मध्यदेशस्ते पीड्यंते मेषराशि ग्रहेण ॥१३६॥

ग्रहण मेष राशि में हो तो पंजाब, शूरसेन–मथुरा, कलिंग, कांबोज, अन्ध्र, किरात, मध्यदेश और शस्त्र से तथा अग्निसे आजीविका करनेवाले इनको पीड़ा होवे।

वृष राशि फल—

गोपा पशवो धगोमिनो मनुजा ये च महत्त्वमानिनः।
त पीडामुपयांति भास्करे ग्रस्ते शीतकरे धवाद्वये ॥१३७॥

ग्रहण वृष राशि में हो तो गोप, पशु, गोमिन मनुष्य, और बहुत अभिमान वाले–इनको पीड़ा होवे।

मिथुन राशि फल—

भूपाश्च भूपसदृशाः प्रवरांगनाश्च
सुह्माश्च वाह्लिकजना वालिनः कलाज्ञाः।
मत्स्या तथा जनपदा यमुनातटस्था
पीडां प्रयान्ति मिथुने ग्रहणे रविन्द्वोः ॥१३८॥

ग्रहण मिथुन राशि में हो तो राजा, राजाओं के सदस्य, उत्तम स्त्रियें, सुम्र देश, बाह्लीक, बलवान्, कलाकुशल, मत्स्य देश और यमुना तटके देश—इनको पीड़ा होवे।

कर्क राशि फल—

आभीरपल्हवमान् शबरांश्च मत्स्यान्
पांचालमल्लविकलांश्च गुरुन्निहन्यात्।
मांजिष्ठमौक्तिकघृतान्न गुडाश्च तैल
नश्यंति कर्कटगतं ग्रहणं यदि स्यात् ॥१३९॥

ग्रहण कर्क राशि में हो तो आभीर, पल्व, शबर, मत्स्य पंजाब, मल्ल, विकल मनुष्य, गुरुजन—इनको पीड़ा और मजीठ, मोती, घृत, गुड़, तैल—इत्यादि का भाव तेज हो जावे।

सिंह राशि फल—

सिंहे पुलिंदगणमेकलसत्वयुक्तां
स्तेजोमयान्नरपतिन्वन गोचरांश्च।
काश्मीरकांश्च विनिहंति पशुंश्च दुर्गे
ये संश्रिता अपि च तान् ग्रहणं रवीन्दोः ॥१४०॥

ग्रहण सिंह राशि में हो तो पुलिंद, काश्मीर, गण, मेकल, देश, किले में रहने वाले, सत्व युक्त, तेजस्वी राजा, वन में विचरने वाले, और, पशु—इनको पीड़ा होवे।

कन्या राशि फल—

कन्यागते रविशशिग्रहणे विनाश
मायांति सस्यकविलेखकगेयसक्ताः।
देशास्तथात्रिपुरशालियुताश्मकाश्च
सिद्धौपधेषुयुवती जनिताश्च गर्भा ॥ १४१ ॥

ग्रहण कन्या राशि में हो तो खेती वाले, लेखक, मकान में रहने वाले, त्रिपुर तथा अश्मक देश को कष्ट, स्त्रियों के गर्भों को पीड़ा और चावल तथा ओषधियों का नाश होवे।

तुला राशि फल—

तुलाधरेखंसपरांससाधून् वणिग्दशार्णान् कुरुकच्छपांश्च।
हन्यारवीन्द्वोर्ग्रहणंतु राज्ञां करोति युद्धं त्वथ दृष्टिनाशं ॥१४२॥

ग्रहण तुला राशिमें हो तो परान्त देश, साधूजन, व्यापारी, दशार्ण, कुरु तथा कच्छ देशमें कष्ट; वर्षाका नाश और राजाओंमें परस्पर युद्ध होवे।

वृश्चिक राशि फल—

अलिन्यथोडुंबरमद्रचोलान् द्रुमान् सयोधेयविषांबुधीयान्।
हिमांशुसूर्यग्रहणं निहंति धनाधिपांश्चापि सुभिक्षकृत्स्मात्॥१४३॥

ग्रहण वृश्चिक राशि में हो तो उदंबर, मद्र, चोल तथा योधेय देश, अफीम आदि विष, जल, और बुद्धिवान् तथा धनवान्—इनको पीड़ा और जगत् में सुभिक्ष होवे।

धन राशि फल—

ग्रहो रवींदोर्यदि चापरासौ हन्यादमासान्वरवाजिमल्लान्।
विदेहपांचालवणिग्जनोग्रा युद्धवैद्यांश्च तथौषधानि ॥ १४४ ॥

ग्रहण धन राशि में हो तो राज्य मन्त्रि, श्रेष्ठ घोड़े, मल्ल विदेह व पंजाब आदि देशो, व्यापारी, योधा, वैद्य और ओषधी—इनको पीड़ा होवे।

मकर राशि फल—

हन्यान्मृगे तुझपमंत्रिकुलानि नीचान्
मंत्रौषधेषु कुशलां स्थविरायुधे यान्।
अन्यांस्तथायुधकरान् ग्रहणं रवींदो
र्हेशांश्च दक्षिणभवान् प्रवदंति संतः ॥१४५॥

ग्रहण मकर राशि में हो तो मच्छियों, मन्त्री, नीच कुल के मनुप्य, मन्त्रआदि, ओषधियों को पहिचानने वाले, स्थिर-तृणादि, आयुध, युद्ध कुशल मनुष्य और दक्षिण देश वासी—इन को पीड़ा होवे।

कुम्भ राशि फल—

कुम्भे यदा ग्रहणमिद्विनयोस्तदानीं
पाश्चात्यजान गिरिभवान् दरदानजनाश्च।
आभीरकानपि पुरानपिवर्बराश्च
भारोद्वहार्य गजचौरनृपाः निहन्ति ॥ १४६ ॥

ग्रहण कुम राशि मे हो तो पश्चिम देश वासी, पर्वतों पर रहने वाले, दरद देश निवासी, आभीर व बर्बर देश, भार उठाने वाले उष्ट आदि, हाथी, चोर और राजा-इनको पीड़ा होवे।

मीन राशि फल—

मीनस्थितं ग्रहणमिंदुसहस्त्रभान्वोः
प्राज्ञान् जनाश्च धनिनो जलजीविनश्च।
हन्याच्च सागरतटं च समुद्रजानि
द्रव्याणि नाशमुपयान्ति च मानयुक्ताः ॥ १४७ ॥

ग्रहण मीन राशि में हो तो विद्वान्, धनवान, जल से जीविका करनवाले, समुद्र के किनार के देशों में रहने वाले, समुद्र मे उत्पन्न होने वाले शीप शख आदि द्रव्य और अभिमान वाले मनुष्य-इन को पीडा होवे।

राशि वश से हरएक वस्तु की तेजी मन्दी—

यस्मिन् राशौ भवेत्पर्व तस्यावाच्य क्रयाणकम्।
अत्यर्घ्यलभतेमूल्यं पीड्यमाने च राहुणाः ॥ १४८ ॥

ग्रहण मेषादि चाहे जिस राशि में हो उस राशि के नामकी वस्तुएं बहुत महगी हो जावे जैसे ग्रहण मेष राशि में हो तो जिन वस्तुओं की मेष राशि होगी वे वस्तुएं बहुत महगी हो जावे।

नीच राशि स्थित चन्द्र ग्रहण फल—

नीचावलम्बिसोमस्तु यदा गृह्येत राहुणा ।
सर्पाकारास्तदा भर्त्ता सरूक्स्थम्पारे पीडयेत् ॥ १४९ ॥
अल्पा चन्द्रश्च दीपाश्च म्लेछो; पूर्वापराद्विजाः ।
दीक्षिताः क्षत्रिया भृत्याः शूद्राः पीडामवाप्नुयः ॥१५०॥

चन्द्र ग्रहण के समय चन्द्रमा नीच राशि–वृश्चिक राशि का हो तो सर्पाकार तथा भर्त्त देश में रोगादि का उपद्रव, तथा ग्रह भक्तिमें चन्द्रमा जिन देशों का स्वामि है उन देशों में तथा म्लेछ, ब्राह्मण, दीक्षित, क्षत्री भृत्य–नोकर और शूद्र–इनकी पीडा होवे।

—⊛⊛—

खांश (आकाश भाग) फल प्रकरण ।

खांश निर्णय—

रात्रेर्दिनस्य च मितिस्तुरगैर्विभाज्या
लब्धं नभोंशक मितिस्तुगतैप्रनाड्यः ।
खांश प्रमाण विद्बुलाः फल संख्ययायम्
खांशादिने निशि च ते नगसंख्यकास्युः ॥१५१॥

ग्रहण का स्पर्श अर्थात् प्रारम्भ दिन में हो तब तो दिन मानकी घटि पल (सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त) के और रात्रि में हो तो रात्रि मानकी घटि पल (सूर्यास्त से सूर्योदय पर्यन्त) के ७ भाग करे इसे आकाश भाग माने हैं। फिर ग्रहण के स्पर्श समय की घटि पल जिस आकाश भागमें हो उस के अनुसार ग्रहण के स्पर्श समय का आकाश भाग जाने इसे खांश भी कहते हैं।

प्रथम खांस का फल—

आद्ये नभोंशे ग्रहणं रवीन्दोः गुणाधिकान नैकविकांश्चविप्रान्
हुताशवृत्तिंश्च समस्तयज्ञान् यज्ञांस्तथैवाश्रमिणो निहन्तिः ॥१५२॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के प्रथम भाग में हो तो गुणि जन, खेती करने वाले, ब्राह्मण, लुहार, सुनार, हलवाई भाड़ भूंजे अंजनेर आदि अग्नी जीवि, यज्ञ करने वाले, बुद्धिवान् और वान प्रस्तादि आश्रमी–इत्यादिकों कष्ट होव।

दूसरे खांश का फल—

खांशे द्वितीये ग्रहणं रवीन्दोः कृषीवलानां वलनायकानाम्।
पाखण्डिनां चापि वणिक्जनानां राजन्यकानां च विनाश कृत्स्यात्

ग्रहण का स्पर्श आकाश के दूसरे भाग में हो तो खेती करनेवाले, सेनापति, पाखंडी, व्यापारी वा महाजन और राजपूत आदि के पीड़ा होवे।

तीसरे खांश का फल—

खांशे तृतीये ग्रहणं रवींदोः म्लेछांश्च शुद्रानपिमंत्रिणश्च।
कारूनिहन्यादपि मध्यदेशं छत्रं च कांस्यत्रपुकं महर्घम् ॥१८४॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के तीसरे भाग में होतो म्लेछ, शूद्र, राज्य मन्त्री, कारुक जन आदि को कष्ट; मध्य देश के राजा को पीड़ा और कांसी तथा कतीर का भाव तेज होवे।

चौथे खांश का फल—

खांशे चतुर्थे ग्रहणं रविंद्रोः तदा निहन्यात्वलुमध्यदेशम्।
नृपांस्तयामंत्रिजनान् पशूंश्च धान्यं च सर्व कुरुते महर्घम् ॥१८५॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के चौथे भाग में हो तो मध्य देश का नाश, राजा तथा राज्य मन्त्रियों को कष्ट, पशुओं को दुःख और सर्व प्रकार के धान्यों का भाव तेज हो जावे।

पांचवें खांश का फल—

आकाशभागे यदि पंचमे स्यात् हिमांशु सूर्ये ग्रहणे तदानीम्।
वैस्यानपखांश्च पशूश्चहन्यादंतः पुरवापितिलान् शिशूंश्च ॥१८६॥

ग्रहण का स्पर्श—आकाश के पाञ्चवें भाग में हो तो वैश्य, बालक, पशु तथा राजाओंके अन्तपुर (रनवास) आदि को कष्ट पीड़ा और तिलों का भाव तेज हो जावे।

छठे खांश का फल—

षष्ठेनभोंशे ग्रहणेरविन्दोः स्त्रीशूद्ररत्नांश्च निहंतिकन्याः ॥
सुवर्ण कर्पूरक कुंकुमानां महर्घतस्यादपिनागवल्माः ॥१६०॥

ग्रहण का स्पर्श—आकाश के छठे भाग में हो तो स्त्रियो, कन्याओं, तथा शूद्रों का नाश; नागरवेल के पानों की कमी, और सोना, रत्न, कपूर, केसर आदि का भाव तेज हो जावे। ·

सातवें खांश का फल—

खांशे यदा सप्तमके रविन्दोः ग्रहस्तदा चौर विमर्दकर्त्ता ॥
प्रसंतहिचापि गजाश्ववैश्यापीडा करो वस्त्र विनाशकृच ॥१६१॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के सातवें भाग में हो तो चोरों का उपद्रव, हाथी तथा घोड़ों को कष्ट, वैश्यों को पीड़ा और कपड़े का भाव तेज हो जावे।

ग्रन्थान्तर में आद्य खांश फल—

यौवनस्थांश्च पूर्वाह्ले हन्ति यज्ञविदाञ्जनान्।
औदकानि च सत्त्वानि नागेन्द्रश्चात्र दुःखितः ॥१६२॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के आद्य भाग में हो तो यौवन अवस्था वाले, यज्ञ करने वाले, जल से उत्पन्न होने वाले और हाथीयों के स्वामि—इनको पीड़ा होवे।

ग्रन्थान्तर से मध्य खांश फल—

अथ मध्यस्थ संग्रासः शूद्रान् हन्ति सतस्करान्।
उपरक्तो नृपं हन्ति चन्द्रश्च वरवारणात् ॥१६३॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के मध्य भाग में हो तो शूद्र, चोर, और, राजा को पीड़ा होवे।

ग्रन्थान्तर से अन्त्य खांश फल—

प्रलम्बः प्रमदां हन्ति क्षत्रं राष्ट्रं च सर्वशः।
त्रिगर्त्ताश्चात्र पीड्यन्ते मत्स्याश्च कुरवो जनाः॥१६४॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के अन्त भाग में हो तो स्त्रियों, क्षत्री, राज्य, त्रिगर्त, मत्स्य और कुरु देश—इनको पीड़ा होवे।

ग्रन्थान्तर से सन्ध्याकाल फल—

सन्ध्याकाले तु गर्भस्था गृहीतः पीडयेत् प्रजाः।
गावो गर्भं विमुञ्चन्ति न च वर्षेत् पुरन्दरः॥१६५॥

ग्रहण का स्पर्श सन्ध्या काल में हो तो गर्भवन्ती स्त्रियों को पीड़ा, गायों के गर्भों का नाश और वर्षा का अभाव होवे।

मोक्ष समय का खांश फल—

एवं खांश फलं प्रोक्तं ग्रहणे स्पर्श कालजम्।
यस्मिन् खांशे विमुक्ति स्याचस्योक्तानां शिवं भवेत्॥१६६॥

ग्रहण के स्पर्श समय के आकाश भाग के अनुसार जिन के लिये जिस प्रकार से उपरोक्त अशुभ फल लिखा है उन्हीं के लिये मोक्ष समय के आकाश भाग के अनुसार उसी प्रकार से शुभ फल होता है अर्थात् जिस भाग में स्पर्श हो उस भाग वालों के लिये अशुभ और जिस भाग में मोक्ष हो उस भाग वालों के लिये शुभ फल जाने।

—x—

ग्रस्तोदय, ग्रस्तास्त व खग्रास फल प्रकरण।

सूर्य चन्द्र ग्रस्तोदय फल—

उदितो ग्रहणं सूर्य चन्द्रमा यदि वा भवेत्।
राजा युद्धं प्रजानाशं सर्वे ग्रस्तोति दुःखदा॥१६७॥

प्रत्युत्तमो रविश्चन्द्रो गृह्यते यदि तत्र च ।
भयं तदा विजातीया ब्राह्मणानामुपस्थितम् ॥१६८॥

ग्रहण ग्रस्तोदय हो तो राजाओं में युद्ध, प्रजा में क्लेश, ब्राह्मणों में भय और सम्पूर्ण ग्रहण हो तो जगत् में बहुत दुःख होवे।

सूर्य ग्रस्तोदय ग्रस्तास्त फल—

उदया स्तमयेवाऽपि सूर्यस्य ग्रहणं भवेत् ।
तदा नृपभयं विद्यात् पर चक्रस्य चागमम् ॥१६९॥

सूर्य का ग्रहण ग्रस्तोदय वा ग्रस्तास्त हो तो श्रेष्ठ राजा को भय, देश में सेना का उपद्रव और महाजनों को कष्ट पीड़ा होवे ।

चन्द्र ग्रस्तोदय ग्रस्तात फल—

यावतोंशान् गृहीत्वन्दुरुदयत्यस्तमेति वा ।
तावतोंशान्पृथिव्यास्तु तम एव विनाशयेत् ॥१७०॥

चन्द्रमा का ग्रहण ग्रस्तोदय वा ग्रस्तास्त हो परन्तु ऐसा ग्रहण जिस दिशा में तथा जितना ग्रस्त हो उस दिशा के देशों का उतने प्रमाण से नाश होवे।

खग्रास फल—

सूर्येन्द्रोःसर्वथा ग्रासे सर्वस्यापि महर्घता ॥१७१॥

ग्रहण खग्रास अर्थात् सम्पूर्ण ग्रहण हो तो व्यापार की सम्पूर्ण वस्तुएं मंहगी हो जावे अतः पहिले से खरीदने वालोंको लाभ होवे ।

खग्रास पाप दृष्टि फल—

ग्रस्तौ समस्तौ यदि पापदृष्टौ हिमांशुसूर्यौ मरक मदोस्तः ।
दुर्भिक्षदौ क्षत्रियदुःखदौ च भयं प्रजानां परचक्रजस्यात् ॥१७२॥

ग्रहण खग्रास हो और सूर्य ग्रहण समये सूर्य पर तथा चन्द्र ग्रहण समय चन्द्रमा पर क्रुर ग्रह की दृष्टि भी हो तो जगत् में महामारी का

ग्रहण का स्पर्श आकाश के मध्य भाग में हो तो शूद्र, चोर, और, राजा को पीड़ा होव ।

ग्रन्थान्तर से अन्त्य खांश फल—

प्रलम्बः प्रमदां हन्ति क्षत्रं राष्ट्रं च सर्वशः ।
त्रिगर्त्ताश्चात्र पीड्यन्ते मत्स्याश्च कुरवो जनाः ॥१६४॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के अन्त भाग में हो तो स्त्रियों, क्षत्री. राज्य, त्रिगर्त्त, मत्स्य और कुरु देश—इनको पीड़ा होवे।

ग्रन्थान्तर से सन्ध्याकाल फल—

सन्ध्याकाले तु गर्भस्था गृहीतः पीडयेत् प्रजाः ।
गावो गर्भं विमुञ्चन्ति न च वर्षेत् पुरन्दरः ॥१६५॥

ग्रहण का स्पर्श सन्ध्या काल में हो तो गर्भवन्ती स्त्रियों को पीड़ा, गायों के गर्भों का नाश और वर्षा का अभाव होवे।

मोक्ष समय का खांश फल—

एवं खांश फलं प्रोक्तं ग्रहणे स्पर्श कालजम् ।
यस्मिन् खांशे विमुक्ति स्यात्तत्प्रोक्तानां शिवं भवेत् ॥१६६॥

ग्रहण के स्पर्श समय के आकाश भाग के अनुसार जिन के लिये जिस प्रकार से उपरोक्त अशुभ फल लिखा है उन्ही के लिये मोक्ष समय के आकाश भाग के अनुसार उसी प्रकार से शुभ फल होना है अर्थात् जिस भाग में स्पर्श हो उस भाग वालों के लिये अशुभ और जिस भाग में मोक्ष हो उस भाग वालों के लिये शुभ फल जाने।

ग्रस्तोदय, ग्रस्तास्त व खग्रास फल प्रकरण ।

सूर्य चन्द्र ग्रस्तोदय फल—

उदितो ग्रहणं सूर्य चन्द्रमा यदि वा भवेत् ।
राजा युद्धं प्रजानाशं सर्व ग्रस्तोति दुःखदा ॥१६७॥

प्रत्युत्तमो रविश्चन्द्रो गृह्यते यदि तत्र च ।
भय तदा विजातीया ब्राह्मणानामुपस्थितम् ॥१६८॥

ग्रहण ग्रस्तोदय हो तो राजाओं में युद्ध, प्रजा में क्लेश, ब्राह्मणों में भय और सम्पूर्ण ग्रहण हो तो जगत् में बहुत दुःख होवे।

सूर्य ग्रस्तोदय ग्रस्तास्त फल—

उदया स्तमयेवाऽपि सूर्यस्य ग्रहणं भवेत् ।
तदा नृपभयं विद्यात् पर चक्रस्य चागमम् ॥१६९॥

सूर्य का ग्रहण ग्रस्तोदय वा ग्रस्तास्त हो तो श्रेष्ठ राजा को भय, देश में सेना का उपद्रव और महाजनों को कष्ट पीड़ा होवे ।

चन्द्र ग्रस्तोदय ग्रस्तात फल—

यावतोंशान् गृहीत्वन्दुरुदयत्यस्तमेति वा ।
तावतोंशान्पृथिव्यास्तु तम एव विनाशयेत् ॥१७०॥

चन्द्रमा का ग्रहण ग्रस्तोदय वा ग्रस्तास्त हो परन्तु ऐसा ग्रहण जिस दिशा में तथा जितना ग्रस्त हो उस दिशा के देशों का उतने प्रमाण से नाश होवे ।

खग्रास फल—

सूर्येन्द्रोःसर्वथा ग्रासे सर्वस्यापि महर्घता ॥१७१॥

ग्रहण खग्रास अर्थात् सम्पूर्ण ग्रहण हो तो व्यापार की सम्पूर्ण वस्तुएं मंहगी हो जावे अतः पहिले से खरीदने वालोंको लाभ होते ।

खग्रास पाप दृष्टि फल—

ग्रस्तौ समस्तौ यदि पापदृष्टौ हिमांशुसूर्यौ मरक मदीस्तः ।
दुर्भिक्षदौ क्षत्रियदुःखदौ च भयं प्रजानां परचक्रजस्यात् ॥१७२॥

ग्रहण खग्रास हो और सूर्य ग्रहण समये सूर्य पर तथा चन्द्र ग्रहण समय चन्द्रमा पर क्रूर ग्रह की दृष्टि भी हो तो जगत् में महामारी का

उपद्रव, दुर्भिक्ष का भय, राजाओं—क्षत्रियों को पीड़ा और प्रजा को पराई सेना के उपद्रव का भय होवे।

दिशा फल प्रकरण।

ईशान कोण फल—

ईशान्यां दृश्यते राहुर्ग्रासेहिंमरुचेर्यदा।
महावातं महाशीतं सुभिक्षं क्लेशिताः प्रजाः॥ १७३॥

ग्रहण का स्पर्श ईशान कोण से हो तो वायु का वेग अधिक, अति शीत, सुभिक्ष और प्रजाको क्लेश होवे।

पूर्व दिशा फल—

पूर्वस्यां दृश्यते राहुस्तोयपूर्णांवसुंधराम्।
करोति राजपुत्रांश्च हन्याच्चैव वरांगनाः॥ १७४॥

ग्रहण का स्पर्श पूर्व से हो तो वर्षा अधिक, क्षत्रियों को कष्ट और श्रेष्ठ स्त्रीको पीड़ा होवे।

अग्नि कोण फल—

अग्नेयां हिमगोर्ग्रासे दृश्यते राहुमण्डलम्।
अग्निचौरभयं चैव मन्नवस्त्रमहर्घत॥ १७५॥

ग्रहण का स्पर्श अग्नि कोण से हो तो अग्नि का भय, चोरों का उपद्रव और धान्य तथा वस्त्र तेज हो जावे।

दक्षिण दिशा फल—

चन्द्रार्कग्रहणे ग्रासो दक्षिणस्यां यदा भवेत्॥
हन्याजलचरान् वैश्यान् गजांश्च जलदानपि॥ १७६॥

ग्रहण का स्पर्श दक्षिण से हो तो जलचर प्राणियों का नाश, वैश्यों को पीड़ा, हाथियों को कष्ट और वर्षा की कमी होवे।

नैऋत्य कोण फल—

सूर्यबिंबे यदाग्रासो नैऋत्यां राहु दर्शनम्।
दुर्भिक्षं निष्ठुरालोकाः साधवो यांति पीडनम्॥ १७७॥

ग्रहण का स्पर्श नैऋत्य कोण से हो तो दुर्भिक्ष का भय, लोगो में निष्ठुरता, और साधु पुरुषों को पीड़ा होवे।

पश्चिम दिशा फल—

सूर्यग्रासश्च वारुण्यां क्षेमारोग्यसुभिक्षकृत्॥
हन्यात् कृषिकरान् बीजं शूद्रान् सेवाकरांस्तथा॥ १७८॥

ग्रहण का स्पर्श पश्चिम से हो तो जगत् मे क्षेम, आरोग्य, सुभिक्ष आदि का सुख किन्तु खेती करने वालों, शूद्रों, नौकरी करने वालों और सर्व प्रकार के बीजों का नाश होवे।

वायव्य कोण फल—

भास्करग्रासकाले च वायव्या दृश्यते तमः॥
महावातप्रचंडाभिर्दृष्टिभिः खंडमंडलम्॥ १७९॥

ग्रहण का स्पर्श वायव्य कोण से हो तो वायु महान् प्रचंड चलेऔर वृर्षा विषम अर्थात् कहीं तो होवे और कहीं बिलकुलही नहीं होवे।

उत्तर दिशा फल—

उत्तरस्यां दिशि यदा दृश्यते सिंहिकासुतः।
गवां पीडा च विप्राणामश्वानां वनवासिनाम्॥ १८०॥

ग्रहण का स्पर्श उत्तरसे हो तो गायों को पीड़ा, ब्राह्मणों को कष्ट, घोड़ों की हानी और वनवासियों को क्लेश होवे।

ग्रास फल प्रकरण।

दश प्रकार ग्रास निर्णय—

सव्यापसव्य लेह ग्रसन निरोधावमर्दनारोहाः।
आघ्रान्तं मध्यतमस्तमोऽन्त्य इति ते दश ग्रासाः॥ १८१॥

ग्रहण के (१) सव्य, (२) अपसव्य, (३) लेह, (४) ग्रसन, (५) निरोध, (६) अवमर्दन, (७) आरोहण, (८) आघ्रान, (९) मध्यतम और (१०) अन्त तम नामक दश प्रकार के ग्रास होते हैं।

सव्य ग्रास फल—

राहुर्यदा सव्यगतः शदृश्यते प्रजाविवृद्धिः ससुभिक्ष्यनिर्भयं॥
वृष्टिः प्रभूतायुदितं जगद्भवेत् सेव सुताधर्मरताश्च मानवाः॥ १८२॥

सूर्य ग्रहण का स्पर्श वायव्य कोण से और चन्द्र ग्रहण का स्पर्श अग्नि कोण से हो तो वह सव्य भ्रमण नामक ग्रास होता है। ऐसा ग्रास हो तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, प्रजा की वृद्धि, जगत में प्रसन्नता, परोपकार में प्रवृत्ति और धर्म में श्रद्धा वाले मनुष्य होवें।

अप सव्य ग्रास फल—

राहुर्यदा यात्यपसव्यगत्या तदा प्रजानां नृपपीडनं स्यात्॥
दुर्भिक्षचोराग्निभयं सरोगमल्पां च वृष्टिं प्रकरोति मेघः॥ १८३॥

सूर्य ग्रहण का स्पर्श नैर्ऋत्य कोण से और चन्द्र ग्रहण का स्पर्श ईशान कोण से हो तो वह अप सव्य नामक ग्रास होता है ऐसा ग्रास हो तो प्रजा को राजाका कष्ट, दुर्भिक्ष का भय, चौरों की पीड़ा, अग्नि का उपद्रव, रोगों का भय, और वर्षा की कमी होवे।

लेह ग्रास फल—

जिह्वोपलेहिपरितस्तिमिरनुदो मंडले यदि सलेहः॥
प्रमुदितसमस्तभूताः प्रभूत तोया च तत्र मही॥ १८४॥

ग्रहण के समय सूर्य वा चन्द्रमा का बिम्ब बीचमें से जैसे निन्हासे चाटे हुये के सदृश्य दीखे उसे लेह नामक ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो सम्पूर्ण प्राणि प्रशन्न रहे और वर्षा बहुत होवे।

ग्रसन ग्रास फल—

ग्रसनमिति यदा अंशः पादो वा गृह्यते तथाप्यर्द्धं।
स्फीतनृपवित्तहारीपीडा च स्फीतदेशानाम् ॥ १८५ ॥

ग्रहण के समय सूर्य वा चन्द्रमा के तृतीयांश, चौथाई वा आधे बिम्ब को ग्रहण हो तो उसे ग्रसन, नामक ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो स्फीत देश के राजा को कष्ट, प्रजा को पीड़ा और धन की हानी होवे।

निरोध ग्रास फल—

पर्यंतेषु गृहीत्वामध्यपिंडिभूतं तमस्तिष्टेत्
सनिरोधो विज्ञेयः प्रमोदकृत्सर्व भूतानाम् ॥ १८६ ॥

ग्रहण के समय सूर्य वा चन्द्रमा का बिम्ब के चरों ओर से ग्रहण लग कर बीच में पिंडाकार हो तो उसे निरोध नामक ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो सम्पूर्ण जगत् को आनन्दप्रद होवे।

अवमर्दन ग्रास फल—

अवमर्दमितिनिः शेषमेवसंछाद्यमिव तिष्टेत् ॥
हन्यात् प्रधानपुरुषान् प्रधानदेशांश्चतिमिरमयः ॥ १८७ ॥

ग्रहण के समय सूर्य चन्द्रमा के सम्पूर्ण बिम्ब को छाइन करके बहुत समय तक ग्रहण रहे तो उसे अर्वमर्दन नामक ग्रास कहते है। ऐसा ग्रास हो तो प्रधान पुरुषों को कष्ट और प्रधान देशों के पीड़ा होवे।

आरोहण ग्रास फल—

वृत्ते ग्रहे यदि तमस्तत्क्षणमावृत्यदृश्यते भूयः ॥
आरोहणमित्यन्यान्यमर्दनैर्भयकरं राज्ञा ॥ १८८ ॥

ग्रहण होने के उपरान्त फिर तत्काल ग्रह होना हुआ दीखे तो उसे आरोहण नामक ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो राजाओं को परस्पर एक दूसरे का भय होवे।

आघ्रात ग्रास फल—

दर्पणामिवैकदेशे सवाष्पनिश्वासमारुतापहतम्।
दृश्येताघ्रातं तत्सुवृष्टिवृद्ध्यावहजगतः ॥ १८९ ॥

ग्रहण के समय सूर्य चन्द्रमा का बिम्ब एक ओर दर्पन के समान वायु वा धूप से मलीन दीखे तो उसे आघ्रात ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो वर्षा श्रेष्ठ तथा जगत् की वृद्धि होवे।

मध्यतम ग्रास फल—

मध्य तमः प्रविष्टं वितमस्कं यदि मंडलं परितः ॥
तन्मध्यदेशनाशं करोति कुक्ष्यामयभयं च ॥ १९० ॥

ग्रहण के समय सूर्य चन्द्रमा का बिम्ब बीच में से ग्रस्त तथा अन्त में मण्डल के समान हो तो उसे मध्यतम नामक ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो मध्य देश को पीड़ा और उदर रोग का भय होवे।

अन्ततम ग्रास फल—

पर्यन्तेष्वति वलं स्वयं मध्यतमस्ततोन्त्याख्ये।
सस्यानामिति भयं भयंमस्मिन्स्तस्कराणां च ॥ १९१ ॥

ग्रहण के समय सूर्य चन्द्रमा का बिम्ब बीच मे से तो स्वच्छ और अन्त में ग्रास हो तो उसे अन्ततम ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो किसी प्रकार के उपद्रवों से खेतियों का नाश तथा जगत् में चोरों का भय होवे।

वर्ण फल प्रकरण ।

धूम्र वर्ण फल—

धूम्रे क्षेमं सुभिक्षं च वर्षते ह्यमृतोपमम् ।
महोत्साही भवेल्लोकः सर्वोपद्रववर्जितः ॥ १९२ ॥

ग्रहण का वर्ण धूम्र हो तो जगत् में क्षेम, कल्याण, सुवृष्टि, सुभिक्ष तथा मंगलीक उत्सव अधिक और सर्व प्रकार के उपद्रवों का नाश होवे।

कृष्ण वर्ण फल—

महिषा मद्यकाराश्च कुंजरा वह्निजीविनः ।
शूद्राश्चैव प्रपीड्यंते कृष्णवर्णे विधुन्तुदे ॥ १९३ ॥

ग्रहण का वर्ण कृष्ण हो तो मद्य बनाने वालों, भैंसियों, हाथियों, अग्नि से आजीविका करने वालों और शूद्रों को पीड़ा होवे ।

ताम्र वर्ण फल—

रक्तः कृष्ण विमिश्राभे सस्यानां वज्रजंभयम् ।
युद्धं परस्परं राज्ञां प्रजानां पीडनं भवेत् ॥ १९४ ॥

ग्रहण का वर्ण लाल और काला-मिला हुआ ताम्र के समान हो तो बिजली गिरने से खेतियों का नाश होवे ।

कपिल वर्ण फल—

कपिले शीघ्रगाः सत्वा म्लेछानाशं प्रयांति हि ।
दुर्भिक्षं नृपपयुद्धं च शेषवर्णा अनिष्टदा ॥ १९५ ॥

ग्रहण का वर्ण काला और पीला मिला हुआ कपिल वर्ण हो तो शीघ्र चलनेवाले हरण तथा ऊंट आदि पशुओं को पीड़ा, म्लेछों को कष्ट, दुर्भिक्ष का भय और राजाओं के युद्ध होवे।

वर्णवश ब्राह्मणादि वर्णों को अशुभ फल—

रक्तो राहु शशी सूर्यो हन्याक्षैत्रान् सिताद्विजान् ।
विशः पीतो विवर्णस्तु कृष्णः शूद्रान्निघांसति ॥ १९६ ॥

ग्रहण का वर्ण श्वेत हो तो ब्राह्मणों का, लाल हो तो क्षत्रियों का, पीला हो तो वैश्यों का काला हो तो शुद्रों का और विवर्ण (मिश्र वर्ण) हो तो विजातियों का नाश होवे।

वर्णवश विशेष फल—

श्वेतेक्षेम सुभिक्षं ब्राह्मणपीडां च निर्दिशेद्राहौ।
अग्निभयमनिल.वर्णे पीडा च हुताशवृत्तिनाम् ॥ १९७ ॥
हरितेरोगोल्वणता सस्यानामीतिभिश्च विध्वंसः।
कपिले शीघ्रगसत्व म्लेछध्वंसोऽथ दुर्भिक्षम् ॥ १९८ ॥
अरुणकिरणानुरूपे दुर्भिक्षावृष्टयो विहग पीडा।
आधूम्रे क्षेमसुभिक्षमादिशेन्मन्द वृष्टिं च ॥ १९९ ॥
कापोतारुण कपिलश्या वाभे क्षुद्भय विनिर्देश्यम्।
कापोतः शुद्राणां व्याधिकरः कृष्ण वर्णश्च ॥ २०० ॥
विमलक मणिपीताभो वैश्यध्वंसी भवेत् सुभिक्षाय।
सार्चिष्मत्यग्निभयं गैरिकरूपे तु युद्धानि ॥ २०१ ॥
दूर्वाकाण्डश्यामे हारिद्रे वापि निर्दिशेन्मरकम्।
अशनिभयमदायी पाटलि कुसुमोपमो राहुः ॥ २०२ ॥
पांशुविलोहितरूपः क्षत्रध्वंसाय भवतिवृष्टेश्च।
बालरवि कमल सुरचाप रूपभृच्छस्त्रकोपाय ॥ २०३ ॥

ग्रहण का वर्ण श्वेत हो तो सुभिक्ष किन्तु ब्राह्मणों को पीड़ा, अग्नि के समान हो तो अग्नि का भय तथा अग्नि से जीविका करने वाले सुनार लुहार अग्नेर आदि को पीडा, हरा हो तो रोगों का उपद्रव तथा अति वृष्टि अनावृष्टि टीडि आदि से खेतियों का नाश. कपिल होतो शीघ्र चलने वाले ऊट आदि प्राणियों व म्लेछों को कष्ट तथा दुर्भिक्ष का भय, लाल हो तो अनावृष्टि व दुर्भिक्ष का भय तथा पक्षियों को पीड़ा, धूम्र हो तो क्षेम व सुभिक्ष किन्तु वर्षा अधिक नहीं होवे, कपोत, लाल वा कपिल मि-

श्रित श्याम हो तो दुर्भिक्ष का भय, कपोत वा कृष्ण हो तो शुद्रों को रोग भय, नील मणिके सदृश्य हरा वा पीला हो तो वैश्यों को पीड़ा, ज्वाला सदृश्य हो तो अग्नि का भय, गेरुके सदृश्य लाल हो तो युद्ध भय; दूरवा वा हरिद्रा सदृश्य हरा पीला हो तो महा मारी का भय, गुलाबी हो तो बिजली गिरने का भय, लाल मिश्रित धूलि सदृश्य हो तो क्षत्रियों का नाश तथा अनावृष्टि का भय, और प्रातकाल के सूर्य, कमल वा इन्द्र धनुष्य के सदृश्य वर्ण हो तो शस्त्र भय होवे।

ग्रह दृष्टि फल प्रकरण।

सूर्य ग्रहण के समय सूर्य पर और चन्द्र ग्रहण के समय चन्द्र पर जिस ग्रह की दृष्टि होगी वही दृष्टि ग्रहण पर भी हो जाती है।

भौम दृष्टि फल—

ग्रस्तं यदा पश्यति भूमिपुत्रो रक्तानि वस्तून्यखिलानि नाशम्।
प्रयंति चौराग्निनृपाहवैश्च पीडा प्रजानां च भवेत्तदानीम्॥२०४॥

ग्रहण पर मंगल की दृष्टि हो तो लाल रंगकी सम्पूर्ण वस्तुओं का नाश, चोरों का भय, अग्नि का उपद्रव, राजाओं के युद्ध भय और प्रजा को कष्ट होवे।

बुध दृष्टि फल—

ग्रस्तं बुधः पश्यति चेत्तदानीं मध्वाज्यतैलक्षयकृत्नराज्ञाम्।
पीतानि धान्यानि च पीतधातून् स्वर्णादिकान्नाशयति प्रभूतान्॥२०१

ग्रहण पर बुध की दृष्टि हो तो सहत, तैल, घृत मक्की आदि पीला धान्य, सोना तथा पीतल आदि पीली धातु का नाश और राजाओं को कष्ट होवे।

शुक्र दृष्टि फल—

शुक्रस्य दृष्टिर्ग्रहणे यदि स्यात्सस्यप्रणाशो भवति क्षितौ च।
क्लेशो महांश्चापि सिताश्रधातु धान्यांबराणि प्रथयंति मूल्यम्॥२०६

ग्रहण पर शुक्र की दृष्टि हो तो खेतियों का नाश, चावल ज्वार आदि स्वेत धान्य तथा चांदी कतीर आदि स्वेत धातु मलमल जगनाथी आदि स्वेत कपड़े का भाव तेज और जगत में महान् क्लेश होवे।

शनि दृष्टि फल—

शनैश्चरश्चेग्रहणं निरीक्षे दुर्भिक्षचौरोत्थभयं त्ववृष्टिम्।
कृष्णानि धान्यानि च कृष्णधातून् कुर्यान्महर्घान्यासितान् विलेपान्।

ग्रहण पर शनि की दृष्टि हो तो वर्षा का नाश, दुर्भिक्ष का कष्ट, चौरों का भय, उडद आदि कृष्ण धान्य लोहो आदि कृष्ण धातु तथा कृष्णागर कस्तुरी आदि कृष्ण लेपन वस्तुओं का भाव तेज हो जावे।

गुरु दृष्टि फल—

जीवो यदा पश्यति सूर्यमिन्दुं ग्रस्तं तदा सर्व खगेक्षणायत्।
फलं त्वनिष्टं गदितं निहन्यात्सर्वत्र लोकेष्वपि सौख्यकृत्स्यात्२०८.

ग्रहण पर गुरु की दृष्टि हो तो भौमादि ग्रहों की दृष्टि के सम्पूर्ण अशुभ फलों का नाश होकर जगत्में सर्व प्रकार का सुख होवे।

ग्रह ग्रस्त फल प्रकरण।

सूर्य ग्रहण के समय सूर्य जिस राशि का हो उसी राशि पर और चन्द्र ग्रहण के समय चन्द्र जिस राशी का हो उसी राशी पर जो ग्रह हो वह ग्रह भी ग्रस्त कहलाता है।

भौम ग्रस्त फल—

आवंतिका जनपदाः कावेरीनर्मदातटाश्रमिणः।
दिप्ताश्च मनुजपतयः पीड्यंते क्षितिसुते ग्रस्ते॥ २०९॥

ग्रहण के समय मंगल ग्रस्त हो तो उज्जयनी देश के रहनेवालों का·

वेरी तथा नरबदा के किनारो पर रहने वालों की पीड़ा और अभिमानी राजाओं को कष्ट होवे।

बुध ग्रस्त फल—

अंतर्वेदी मरयुं नेपालं पूर्वसागरं शोणम्।
स्त्रीनृपयोधकुमारान् ग्रस्तो ज्ञो हंति विदुपश्च ॥ २१० ॥

ग्रहण के समय बुध ग्रस्त हो तो अन्तरवेदी देश, सरयू नदी के देश नेपाल, पूर्व दिशा का समुद्र, शोणनद, स्त्री, राजा, बालक और विद्वान्—इन को पीड़ा होवे।

वृहस्पति ग्रस्त फल—

ग्रहणोपगते जीवे विद्वन्नृपमंत्रिगजहय ध्वंसः।
सिंधुतटवासिनामप्युदीग्दर्शं संश्रितानां च ॥ २११ ॥

ग्रहण के समय वृहस्पति ग्रस्त हो तो विद्वान्, राज्य मन्त्रि, हाथी, घोड़ों, सिन्ध देश तथा उत्तर देश के लोग—इनको पीड़ा होवे।

शुक्र ग्रस्त फल—

भृगुतनये राहुगते दशार्ण केकयरोमकाहृणाः।
आर्यावर्त्ताः शिवयः स्त्रीसचिवगणाश्च पीडयंते ॥ २१२ ॥

ग्रहण के समय शुक्र ग्रस्त हो तो दशार्ण, केकेय, रोम, हूंण, आर्यावर्त्त और शिवी—इन देशों को पीड़ा; स्त्रियों को कष्ट राज्य मन्त्रियों को क्लेश और प्रजा के मुख्य पुरुषों को दुःख होवे।

शनि ग्रस्त फल—

सौरे मरुभवपुष्करसौराष्ट्रा धातवोर्बुदांत्यजनाः।
गोमंत परियात्राश्रिताश्च ग्रस्ते विनश्यंति ॥ २१३ ॥

ग्रहण के समय शनि ग्रस्त हो तो मारवाड़, पुष्कर, सोरठ, आबू, गोमंत और पर्वत प्रदेश—इन देशों में रहने वालो को पीड़ा और सर्व धातू का भाव तेज हो जावे।

मोक्ष फल प्रकरण ।

दश प्रकार के मोक्ष निर्णय—

हनुकुक्षिपायु भेदा द्विर्द्विः संछर्दनं च जरणं च ।
मध्यंतमयोश्च विदारणमिति दश शशिसूर्ययोर्मोक्षाः ॥२१४॥

ग्रहण का मोक्ष (१) दक्षिण हनु, (२) वाम हनु, (३) दक्षिण कुक्षी, (४) वाम कुक्षी, (५) दक्षिण पायु, (६) वाम पायु, (७) संछर्दन, (८) जरण, (९) मध्य विदारण और (१०) अन्त्य विदारण ऐसे दश प्रकार के मोक्ष होते हैं ।

दक्षिण हनु मोक्ष फल—

अग्नेयामपगमनं दक्षिणहनुभेदसंज्ञितं शशिनः ।
सस्याविमर्दो मुखरुङ्नृपपीडा स्यात्सुवृष्टिश्च ॥ २१५ ॥

ग्रहण का मोक्ष अग्नि कोण में हो तो वह दक्षिण हनु नामक मोक्ष होता है । ऐसा मोक्ष हो तो खेतियों का नाश, लोगों के मुख मे रोग पीडा, राजाओं को कष्ट और वर्षा श्रेष्ठ होवे ।

वाम हनु मोक्ष फल—

पूर्वोत्तरेण वामो हनुभेदो नृपकुमारभयदायी ।
मुखरोगः शस्त्रभयं तस्मिन् विद्यात् सुभिक्षं च ॥ २१६ ॥

ग्रहण का मोक्ष ईशान कोण मे हो तो वह वाम हनु नामक मोक्ष होता है । ऐसा मोक्ष हो तो राजकुमारों को भय, मुख का रोग, युद्ध का उपद्रव और सुभिक्ष होवे ।

*दक्षिण कुक्षी मोक्ष फल ।

दक्षिणकुक्षिविभेदो दक्षिणपार्श्वे यदि भवेन्मोक्षः ।
पीडा नृपपुत्राणामभियोज्या दक्षिणारिपवः ॥ २१७ ॥

---

* ग्रहण का दक्षिण कुक्षी और वाम कुक्षी मोक्ष लिखा है परन्तु गणित के सिद्धान्त से दक्षिण तथा उत्तर दिशा में मोक्ष होता ही नही अत यह फल शास्त्रों में उत्पात वश से मोक्ष होने का माना होगा ।

ग्रहण का मोक्ष दक्षिण में हो तो वह दक्षिण कुक्षी नामक मोक्ष होता है। ऐसा मोक्ष हो तो राजपूतों को पीड़ा और दक्षिण दिशा के शत्रुओं को कष्ट होवे।

*वाम कुक्षी मोक्ष फल—

वामस्तु कुक्षिभेदो यद्युत्तरमार्गमाश्रितो राहुः।
स्त्रिणां गर्भविपत्तिः सस्यानि च तत्र मध्यानि॥ २१८॥

ग्रहण का मोक्ष उत्तर में हो तो वह वाम कुक्षी नामक मोक्ष होता है। ऐसा मोक्ष हो तो स्त्रियों के गर्भों का नाश और खेतियों की उत्पत्ती साधारण होवे।

दक्षिण पायु तथा वाम पायु मोक्ष फल—

नैर्ऋतिवायव्यस्थौ दक्षिणवामौ तु पायुभेदौ द्वौ।
गुह्यरुगल्पावृष्टिर्द्वयोस्तु राज्ञीक्षयो वामे॥ २१९॥

ग्रहण का मोक्ष नैर्ऋत्य कोण में हो तो वह दक्षिण पायु और वायव्य कोण में हो तो वह वाम पायु नामक मोक्ष होता है। ऐसे मोक्ष हो, तो लोगों को गुह्य रोग की पीड़ा, वर्षा अल्प होवे और वाम पायु मोक्ष में महाराणी को कष्ट होवे।

संछर्दन मोक्ष फल—

पूर्वे प्रग्रहणं कृत्वा प्रागेवचापसर्पति।
संछर्दनमितिप्रोक्तं क्षेमं सस्यप्रदं जने॥ २२०॥

ग्रहण का स्पर्श पूर्व में होकर पीछा मोक्ष भी पूर्व में ही हो तो वह संछर्दन नामक मोक्ष होता है। ऐसा मोक्ष हो तो जगत् में क्षेम कल्याण तथा खेतियों की वृद्धि होवे।

जरण मोक्ष फल—

प्राक् प्रग्रहणं यस्मिन् पश्चादपसर्पणंतु तज्जरणम्।
क्षुच्छस्त्रभयोद्विग्ना न शरणमुपयांति तत्र जनाः॥ २२१॥

ग्रहण का स्पर्श पूर्व में होकर पीछा मोक्ष पश्चिम में हो तो वह जरण नामक मोक्ष होना है। ऐसा मोक्ष हो तो जगत् में दुर्भिक्ष का कष्ट और युद्ध का भय होन से लोग दुखी हो जाते हैं।

मध्य विदारण मोक्ष फल—

मध्ये यदि प्रकाशः प्रथमं तन्मध्यविदरणं नाम।
अतः कोपकरं स्यात्सुभिक्षदं नातिवृष्टिकरः॥ २२२॥

ग्रहण के बीच में से प्रथम प्रकाश हो तो वह मध्य विदारण मोक्ष होना है। ऐसा मोक्ष हो तो राजाओं के घर ही में उपद्रव, और वर्षा साधारण होवे तथापि सुभिक्ष हो जावे।

अन्त्य विदारण मोक्ष फल—

पर्यंतपु विमलता बहुले मध्ये तमोऽन्त्यदरणाख्यम्।
मध्याख्यदेशनाशः शारदसस्यक्षयश्चापि॥ २२३॥

ग्रहण के अन्त में प्रथम प्रकाश हो तो वह अन्त्य विदारण नामक मोक्ष होना है। ऐसा मोक्ष हो तो मध्य देश को कष्ट और शरद ऋतु में उत्पन्न होने वाले चावल मुंग ज्वार आदि की खेतियों का नाश होवे।

मोक्ष समय का वर्ण फल—

यथोत्साहं गृहीत्वा तु राहोर्निष्क्रमते शशी।
तदा क्षेमं सुभिक्षं च मद्रोमाश्च निर्दिशेत्॥ २२४॥

ग्रहण के मोक्ष समय में सूर्य वा चन्द्रमा का बिम्ब निर्मल कान्ति का तथा सोभायमान हो तो जगत् में क्षेम कल्याण तथा सुभिक्ष होवे।

काल फल प्रकरण।

एक ग्रहण से आगे होनेवाले ग्रहण का मासानुसार फल—

षण्मासात्प्रकोतिर्ज्ञेया ग्रहाणां वार्षिकम्भयम्।
ना त्रयो दशमासानां पुररोधं समादिशेत्॥ २२५॥

प्रचतुर्दशमासानां विन्द्याद्वाहन जम्भयम् ।
अथ पञ्चदशे मासे बालानां भयमादिशेत् ॥ २२६ ॥
षोडशानान्तु मासानां महामन्त्रीभयं वदेत् ।
सप्तदशानां मासानां महाराज्ञी भयं दिशेत् ॥ २२७ ॥
तथाऽष्टादश मासानां विन्द्याद्राज्ञस्ततो भयम् ।
एकोनविंशकं पर्व विंशं कृत्वा नृपवधेत् ॥ २२८ ॥
अतः परन्तु यत्सर्वं तच्चिनोति कलिं भुवि ।

सूर्य के ग्रहण से आगे फिर सूर्य का ग्रहण और चन्द्रमा के ग्रहणसे आगे फिर चन्द्रमा का ग्रहण ६ । ६ महिनों से होने का स्वभावीक क्रम है परन्तु जिस देश में इस क्रम को छोड कर कोई भी ग्रहण हो तो वह ग्रहण उस देश के राजा के लिये अशुभ फलकारक होता है जैसे–प्रथम के ग्रहण से आगे का ग्रहण १२ महिनों से हो तो जगत् में भय, १३ महिनों से हो तो किसी देश के राज्य के नग्र को शत्रुओं की सेना से घिर जाने का भय, १४ महिनों से हो तो वाहन से भय, १५ महिनों से हो तो राजकुमारों को भय, १६ महिनों से हो तो महा मन्त्रि को भय, १७ महिनों से हो तो महाराणी को भय, १८ महिनों से हो तो स्वयं राजा को भय और १९ वा २० महिनों से हो तो राजा को मृत्यु समान महान् क्लेश होवे। और इससे आगे चाहे जितने महिनों से ग्रहण होवे तो वे सब ग्रहण जगत् के लिये महान् अशुभ फल कारक होते हैं।

छ मास से होने का फल—

स्वर्भानुरिन्दुषष्ठे तु मासे यद्युपतिष्ठति ।
तदा क्षेमं सुभिक्षं च योगक्षेमं च निर्दिशेत् ॥ २२९ ॥

सूर्य वा चन्द्रमा का प्रथम ग्रहण हो उस से आगे होने वाला ग्रहण यदि ६ मास से हो तो जगत् में क्षेम कल्याण आरोग्य तथा सुभिक्ष आदि शुभ फल ही होवे।

तेहेरे महिनों से होने का फल—

मासि त्रयोदशे हश्यो चन्द्रार्कौ ग्रहणं गतौ ।
छत्राण्यनेकानि तदा भज्यन्ते नृपतिक्षय ॥ २३० ॥
कालः शोकावह पुंसां देशाऽनेकविनाशनः ।
स्वचक्र परचक्रैश्च विनश्यति बहुप्रजाः ॥ २३१ ॥

सूर्य वा चन्द्रमा का ग्रहण प्रथम के ग्रहण से आगे १३ वें महीने में हो तो कई देशों में उपद्रव, अपने राज्य की वा शत्रु की सेना से प्रजा को कष्ट, और राजाओं की मृत्यु अधिक होवे ।

अठारह महिनों से होने का फल—

यदा त्वष्टादशे मासि राहुः सोममुपक्रमेत् ।
रसक्षयो व्याधिभयं विनाशः फलपुष्पयोः ॥ २३२ ॥

सूर्य वा चन्द्र मा का ग्रहण १८ वें महीने में हो तो घृत तेल गुड़ खांड सहत आदि रसों का नाश, फल तथा पुष्पों की हानी और रोगों का उपद्रव होवे ।

चन्द्रमा का ५ । ११ व सूर्य का १७ महिनों से होने का फल—

चन्द्रे पञ्चममासे तु मासे त्वेकादशे थवा ।
सप्तदशे वा सूर्यस्य ग्रहणं क्षुद्भयावहत् ॥ २३३ ॥

चन्द्रमा के प्रथम ग्रहण से आगे होनेवाला ग्रहण ५ वें वा ११ वें महीने में हो ऐसही सूर्य का ग्रहण १७ वें महीने में हो तो जगत् में निश्चय दुर्भिक्ष—अकाल का भय होवे ।

चन्द्रमा का ५ वर्षों और सूर्य का १२ वर्षों पीछे होने का फल—

पंञ्चसंवत्सरं घोरं चन्द्रस्य ग्रहणं परम् ।
विग्रहं च परं विन्द्यात्सूर्यद्वादश वा.र्षिकम ॥ २३४ ॥

चन्द्रमा के प्रथम ग्रहण से आगे का ग्रहण यदि ५ वर्षों (६० महिनों) पीछे होवे ऐसे ही सूर्य का ग्रहण १२ वर्षों (१४४ महिनों)

पीछे होवे तो जगत् में युद्ध महामारि आदि अनेक प्रकार के महान् घोर उपद्रव होवे।

एक मास में दो ग्रहण होने का फल—

यद्यैकमासे ग्रहणं भवेच्च शशि सूर्ययो।
राजयुद्धं तदा ज्ञेयं क्षयं याति वसुंधरा ॥ २३५ ॥

एक ही महीने मे चन्द्रमा और सूर्य का—दोनों ग्रहण हो जावे तो राजाओं के युद्ध, चोरों का उपद्रव, पाप कर्मो की वृद्धि, साधूओं को पीड़ा और जगत् में अनेक प्रकार का क्लेश होवे।

एक पक्ष में दो ग्रहण होने का फल—

एक पक्ष मैं भड्डली दोय ग्रहण हुवन्त।
माहि डोले छत्र पडे आई शाख गमन्त ॥ २३६ ॥

कदाचित् उत्पात वशसे एक ही पक्ष में दो ग्रहण हो जावे तो जगत् में भय, राजाओं को कष्ट और खेतियों का नाश होवे।

चन्द्र ग्रहण के एक पक्ष पीछे सूर्य ग्रहण होने का फल—

सोम ग्रहे निवृत्ते पक्षान्ते यदि भवेद्ग्रहोर्कस्य।
तत्रानयः प्रजाना दम्पत्योर्वैरमन्योन्यम् ॥ २३७ ॥

चन्द्रमा के ग्रहण के एक पक्ष पीछे सूर्य का ग्रहण हो तो जगत् में अनेक प्रकार के रोगों का उपद्रव तथा स्त्री पुरुषों के परस्पर में वैर होवे।

सूर्य ग्रहण के एक पक्ष पीछ चन्द्र ग्रहण होने का फल—

रविग्रहाच्च पक्षान्ते यदि चन्द्रग्रहो भवेत्।
तदा दर्शनिनो पूजा धर्म वृद्धिर्महोदयः ॥ २३८ ॥

सूर्य के ग्रहण के एक पक्ष पीछे चन्द्रमा का ग्रहण हो तो यज्ञों की वृद्धि माननीय पुरुषों का सत्कार धर्म का प्रचार और जगत् में आनन्द होवे।

सूर्य चन्द्र और फिर सूर्य ग्रहण होने का फल—

रवि ग्रहणं प्रथमं कुर्यात् चन्द्र ग्रहण रविपुनः।
तदा च षट्का योगं रुण्ड मुण्डा च मेदिनि ॥ २३९ ॥

प्रथम तो सूर्य ग्रहण, फिर चन्द्रमा का ग्रहण और उस के पीछे फिर सूर्य का ग्रहण—ऐसे ३ ग्रहण कभी भी हो तो अनेक प्रकार के उपद्रवों से जगत् का नाश होवे।

अतिवेला ग्रहण फल—

अतिवेला गतं पर्व फलं सस्य विनाशनम् ।
मध्यछत्रं विनश्येत मध्यदेश उपप्लवः ॥ २४० ॥

ग्रहण होने का जो समय गणित से निश्चय किया है उस समय पर न होकर उस से पीछे हो तो वह अति वेला ग्रहण कहलाता है । ऐसा ग्रहण कभी होवे तो फलों का तथा खेतियों का नाश, मध्य देश के राजा को क्लेश तथा मध्य देश के लोगों को उपद्रवों से कष्ट होवे।

हीन वेला ग्रहण फल—

वेलाहीनं यदा पर्व शस्त्रकोप भयंकरः ।
स्त्रीणां च स्रवते गर्भो महाराज्ञां नुविग्रहः ॥ २४१ ॥

इसी प्रकार गणित से निश्चय किये हुवे समय से पहिले ही ग्रहण हो जावे तो वह हीन वेला ग्रहण कहलाता है । ऐसा ग्रहण कभी हो तो शस्त्रों का भय, महाराजा को विग्रह और स्त्रियों के गर्भपात होवे।

अति वेला हीन वेला ग्रहण होने में शंका—

हीनातिरिक्तकाले फलं मया उक्तं पूर्वशास्त्र दृष्टत्वात् ।
स्फुट गणितविदां काल कदाचिदपि नान्यथा भवति ॥२४२॥

ग्रहण के अति वेला और हीन वेला का फल प्राचीन ग्रन्थों में लिखा है किन्तु वराहमिराचार्य इस पर शंका करते हैं कि जिसकी गणित सच्ची होगी उस के निश्चय कीये हुवे समय से आगे या पीछे ग्रहण कदापी नहीं हो सकता ।

अति वेला हीन वेला की शंका का समाधान—

पूर्वाह्णे वा पराह्णे वा वेलाहीनं तदुच्यते ।
मध्याने अति वेलास्यात् त्रयोवेला गुणाः फलम् ॥ २४३ ॥

किसी ग्रन्थकारने मध्यान से वा मध्य रात्रि से पहिले होने वाले ग्रहण को तो हीन वेला और मध्यान वा मध्य रात्रि में होनेवाले ग्रहण को अति वेला मानकर वराह मिहिराचार्य की उपरोक्त शंका का समाधान करा है।

उत्पात फल प्रकरण ।

मुक्ते सप्ताहान्तः पांशुनिपातोऽन्नसङ्क्षयं कुरुते ।
नीहारो रोगभयं भूकम्पः प्रवरनृपमृत्युम् ॥ २४४ ॥
उल्का मन्त्रिविनाशं नानावर्णा घनाश्च भयमतुलम् ।
स्तनितं गर्भविनाशं विद्युन्नृपदंष्ट्रि परिपीडाम् ॥ २४५ ॥
परिवेषो रुक्पीडां दिग्दाहो नृपभयं च साग्निभयम् ।
रुक्षो वायुः प्रबलश्चौरसमुत्थं भयं धत्ते ॥ २४६ ॥
निर्घातः सुरचापं दण्डश्च क्षुद्भयं सपरचक्रम् ।
ग्रहयुद्धे नृपयुद्धं केतुश्च तदेव सन्दृष्टः ॥ २४७ ॥

ग्रहण का मोक्ष होने के बाद ७ दिन के भीतर२ आगे लिखे हुये निमित्तों के होने से प्रत्येक का पृथक् २ अशुभ फल होता है जैसे आंधी आवे तो अन्न का क्षय, धूहर पड़े तो रोगों का उपद्रव, भूकम्प हो तो श्रेष्ठ राजा को क्लेश, उल्का गिरे (नानावर्ण के तारा टूटे) तो राज्य मन्त्रि का नाश, अनेक वर्ण के बादल हो तो बहुत भय, मेघ गाजे तो मेघ के गर्भों का नाश, बिजलि चमके तो राजा का तथा सर्प शूकर आदि दाँतों वाले जन्तुओं का भय, परिवेष (सूर्य चन्द्र के कुण्डल) हो तो रोगों की पीड़ा, दिग्दाह हो (चारों ओर बहुत तेजस्वी सन्ध्या फूले) तो राजा का

तथा अग्नि का भय, रूक्ष वायु जोर से चले तो प्रबल चोरों का उपद्रव, निर्घात (विना बादल गाजे) तथा ईन्द्र धनुष्य अथवा दंड का चिन्ह हो तो दुर्भिक्ष का भय तथा पराये राजा की सेना आने का उपद्रव और ग्रह युद्ध हो (भौमादि शनि पर्यन्त ग्रहों में से कोई २ ग्रह आकाश में बहुत नजीक आवे) अथवा केतुका उदय हो (धूमकेतु वा चोटी वाला तारा दीखे) तो राजाओं के परस्पर युद्ध होवे।

अविकृतसलिलनिपातैः सप्ताहान्तः सुभिक्षमादेश्यम्।
यद्यशुभं ग्रहणजं तत्सर्वं नाशमुपयाति ॥ २४८ ॥

परन्तु ७ सात दिन के भीतर २ यदि पानी वर्ष जाय तो उपरोक्त निमित्तों का तथा ग्रहण सम्बन्धी अन्य भी सम्पूर्ण अशुभ फलों का नाश हो कर जगत में सुभिक्ष हो जावे।

ग्रहण समय बादल वर्षादि ज्ञान प्रकरण।

नवांश वश से वर्षादि निर्णय—

रविभौमनवांशेतु निरभ्रं ग्रासमादिशेत्।
बुध सौरिनवांशे तु मलिनं सुद्रवर्षणम् ॥ २४९ ॥
गुरोरंशकमासाद्य दृश्यते सबलाहकः।
शशिशुक्रनवांशे तु प्रावद् काले महांजलम् ॥ २५० ॥
अन्यत्राव्यक्तभूतौ तौ दृश्यते छादिताम्बरौ।

ग्रहण सूर्य वा मंगल के नवांश में हो तो ग्रहण के समय बादल नहीं, बुध वा शनि के नवांश में हो तो बादल तथा थोडी वर्षा, गुरु के नवांश में हो तो बहुत बादल, और चन्द्र वा शुक्र के नवांश में हो और उस समय वर्षा काल हो तब तो बहुत वर्षा और अन्य काल हो तो आकाश बादलों से ढक जावे इतने बादल होवे।

निमित्तों द्वारा वर्षा आदि निर्णय—

यस्मिन्पक्षे तपनशशिनोः सैंहिके यावमर्द-
स्तत्राष्टम्यां ग्रहणसमयेन्वेषणीय पुरैवः।
दृश्यादृश्यौ यदि जलधरैर्यद्दृश्याविनेन्दू
छायाछन्नौभवत इद्दृशो पर्वकालेपि तद्वत् ॥ २५१ ॥

जिस पक्ष में जिस समय ग्रहण होनेवाला हो उस पक्ष की अष्टमी को उसी समय अर्थात् सूर्य ग्रहण में तो कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन में और चन्द्र ग्रहण में शुक्र पक्ष की अष्टमी की रात्रि में ठीक ग्रहण होने के समय पर जो बादल, वर्षा, वा निर्मल आदि जैसे निमित्त होंगे ठीक वैसेही निमित्त आगे ग्रहण होने के समय भी होवेंगे ऐसा जाने।

मनुष्यादि को जन्म कर्मादि नक्षत्र फल प्रकरण।

जन्म कर्मादि नक्षत्र निर्णय—

जन्मर्क्षमाद्यं दशमं च कर्म संघातिकं षोडशमृक्षमाद्यात्।
अष्टादशं वै समुदायसंज्ञं भवेत्त्रयोविंशतिकं विनाशम्॥२५२॥
यत्पञ्चविंशं खलुमानसं च षडर्क्ष एवं मनुजस्तु सर्वः।
विश्वंभरेशो नवमः स्वजाति देशाभिषेकोद्भवभैः प्रदिष्टम्॥२५३॥

प्रथम तो जन्म नक्षत्र, जन्म नक्षत्र से १० वा कर्म, १६ वा संघातिक, १८ वा समुदायक, २३ वां विनाश, और २५ वां मानस—ये छनत्र मनुष्य मात्रके है और राजाओं के जाति, देश और राज्याभिषेके ये तीन नक्षत्र अधिक होने से नव नक्षत्र माने हैं।

जन्म कर्मादि नक्षत्र पर ग्रहण होने का फल—

जन्मभे पतिहते तनुपीडा कर्मणा फलहतिर्दशमर्क्षे।
षोडशे भवति बान्धवपीडाष्टादशे तनुभृतां धनहानि ॥ २५४ ॥

प्राणिनामसुहृतिश्च विनाशे मानमे विकलतामनसः स्यात् ।
जातिभे भवतिगोत्रविनाशो देशभे सकलदेशविनाश ॥ २६५ ॥
भपीडिते सत्तभिपेकधिष्ण्य भवेन्नृपाणां तनु देशपीडा ।
घोरापि पीडा प्रशमं प्रयाति स्नानैर्य तस्तानि ततोभिधास्ये ॥२६६

ग्रहण जिस मनु के जन्म नक्षत्र पर हो उस मनुष्य के शरीर को पीडा, कर्म नक्षत्र पर हो तो कर्म में हानी, समुदाय नक्षत्र पर हो तो कुटम्बियों को पीड़ा, विनाश नक्षत्र पर हो तो मित्रों का नाश और मानस नक्षत्र पर हो तो मन में विकल्पना होवे । और राजाओं के जाति के नक्षत्र पर हो तो गोत्र वालों को पीडा, देश के नक्षत्र पर हो तो देश का नाश और राज्याभिप के नक्षत्र पर हो तो राजा के शरीर को तथा देश को महान् पीड़ा होवे । परन्तु इन नक्षत्रों की शान्ति कर देने से इन सम्पूर्ण अशुभ फलों का नाश हो जाता है ।

जन्म नक्षत्र फल—

यस्यपद्‌जन्मनक्षत्रे गृह्यते शशि भास्करौ ।
तस्य पुंसः प्रजायन्ते दुःखशोकाप मृत्यवः ॥ २६७ ॥

ग्रहण जिस के जन्म नक्षत्र पर हो उसको दुःख, शोक, तथा अप मृत्यु का भय होवे ।

जन्म राशि तथा जन्म लग्न फल—

यस्मिन्राशौ विलग्ने वा ग्रहणं चन्द्र सूर्ययोः ।
तज्जातानां भवेत्पीडा नराः शान्ति विवर्जिताः ॥ २६८ ॥

ग्रहण जन्मराशि पर वा जन्म लग्न की राशि पर हो तो उस मनुष्य को किसी प्रकार की पीडा होवे परन्तु उस की शान्ति कर देने से फिर पीड़ा नहीं होवे ।

जन्मादि द्वादश राशि फल—

घातंहानिमथश्रियं जननभाध्वर्तिं च चिन्ताक्रमात्
सौख्यंदारवियोजनं प्रकुरुते व्याधिं च मानक्षयम् ।
सिद्धि लाभमपायमर्कशशिनोः षण्मासमध्येग्रहो
राशिनां समुदीरतेन विधिना ज्ञेयं हि सम्यक्फलम् ॥२५९॥

ग्रहण जन्म राशि पर हो तो घात, दूसरी पर हो तो हानी, तीसरी पर हो तो धन प्राप्ति, चौथी पर हो तो विध्वंस, पांचवी पर हो तो चिन्ता, छठि पर हो तो सौख्य, सातवीं पर हो तो स्त्री का वियोग, आठवीं पर हो तो रोग, नववीं पर हो तो मान का क्षय, दशवीं पर हो तो सिद्धि, ग्यारवीं पर हो तो लाभ और बारहवीं पर हो तो हानी ये फल ६ महिनों में होवे।

अनिष्ट ग्रहण शान्ति प्रकरण।

साधारण शान्ति—

सिद्धार्थकुष्ट रजनीद्वयलोध्रमुस्ता
लाजानकैः सफलिनीसुरामांसि युक्ताः ।
स्नानं हितं ग्रहणदोष विनाशनाय
सर्वे ग्रहा रवि मुखा शुभदा भवन्ति ॥ २६० ॥

अनिष्ट ग्रहण की शान्ति के लिये सरसों, कूठ, हलदी, दारु हलदी, लोद, लाजा, मफली, और मुरामांसी—इन ओषधियों को जल में डालकर उस जल से स्नान करने से ग्रहण के अनिष्ट कारक अशुभ फल का नाश होकर सूर्यादि सम्पूर्ण ग्रह शुभ फल दायक हो जाते है। शान्ति की विशेष विधि ग्रहण पुण्य फल दर्पण नामक भाग में लिखेंगे।

ग्रहण श्रवण फल—

> श्रृण्वन्तिये पटगतं ग्रहणं रवीन्दो–
> भेदैरनेकविपुलै रुपपन्नमत्र ।
> ते प्राप्नुवन्तिहरमस्तक सम्पूत
> गङ्गावगाहन फलं विपुलं च लक्ष्मी ॥ २६१ ॥

पश्चाङ्ग में लिखे हुवे ग्रहण सम्बन्धी नाना प्रकार के भेदों सहित लों का विधान श्रवण करने से गङ्गा में स्नान करने के समान फल प्राप्त ता है और ग्रहण के निमित्त मे जगत् में होने वाली सुवृष्टि, अनावृष्टि, भिक्ष, दुर्भिक्ष, तथा हरएक वस्तु की तेजी मन्दी आदि फेरफार को प ल्ले से जानकर व्यापार द्वारा बहुत से धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

—☙—

इति श्री मारवाड देशस्थ जोधपुर राज्यान्तर गत पाली नगर नि ासी पुष्करणा ज्ञातीय व्यासपदवी समलङ्कृत श्रीमन्महीधर तनय नाना- ास्त्र विचारणे मग्न भग्न हृदय, ज्योतिर्विद् वरिष्ठ 'प्राचीन ज्योतिः शास्त्र र्मी', 'दैवज्ञ भूषण', 'ज्योतिष रत्न', आदि पण्डित मीठालाल व्यास स- हीत "बृहदर्घ्य मार्तण्ड" नाम्नो महतो ग्रन्थादुद्धृत 'ग्रहण निबन्ध' ामक चतुर्थ अंकस्य 'ग्रहण फल दर्पण' नामक (१) भाग आर्य भाषा टीका ाहित सम्पूर्णम् ॥
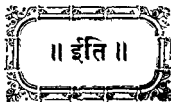
हमारे यहां की पुस्तकें ।

वृष्टि प्रबोध (भारतका वायु शास्त्र) ।

प्राचीन वृष्टि विद्या का भण्डार और सुभिक्ष दुर्भिक्ष को पहिले से जान लेने का सहज उपाय । प्रथम वार की छपी सब पुस्तकें बिक गईं । अब दूसरी वार पहिलेसेभी विशेष उपयोगी उपदेशों सहित छापी है । मूल्य वही रु. १।) वी पी. से १।≈)

संक्रान्ति प्रकाश ।

इस में सूर्य की १२ संक्रान्तियों का फलादेश बहुत विस्तार से लिखा है जिससे जगत्का शुभाशुभ फल तथा धान्य घृत गुड़ वस्त्र धातु आदि हरएक वस्तु की तेजी मंदी ज्ञात हो जाती है । ऐसी उपयोगी पुस्तक हरएक ज्योतिषी तथा व्यापारी को पास रखनी चाहिये । भाषा टीका सहित मूल्य रु. १) पोष्टेज वी. पी. माफ ।

सिद्धान्त सार (पद्यपञ्चाशिका)

जन्म पत्रिका का फल देखने में परम उपयोगी होने से पहिली वार की छपी सब बिक गई । तब दूसरी वार अधिक उपयोगी बनाकर छापी गई थी पर इस की भी अब थोड़ी पुस्तकें रह गई है मूल्य ≈) पोष्टेज)॥. वी. पी. से ।)

उपश्रुति (सोई के शकुन) ।

इस में पुरुष, स्त्री, बालक आदि के शब्द के शकुन पर से सुभिक्ष दुर्भिक्ष तथा हरएक वस्तु की तेजी मन्दी एव लीलाम के आंक फरक आदि का ज्ञान होने की विधि भाषा टीका सहित है मूल्य ≈) पोष्टेज)॥ वी पी. मे ।)

———×———

भवानी वाक्य (१०० वर्ष की गैकी) ।

इसमें प्रत्येक वर्ष में होनेवाली वृष्टि अनावृष्टि, सुभिक्ष दुर्भिक्ष आदि तथा धान्य, घृत तैल गुड, करियाना, कपास, रुई, सूत, कपडा आदि की तेजी मन्दी लिखि है मूल्य ।) पोष्टेज माफ ।

पं० मीठालाल व्यास
ब्यावर—राजपूताना ।